بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ

खराबी है उन नमाज़ियों के लिए
जो अपनी नमाज़ से बे खबर है

दिल की नमाज़

कुर्आन व हदीस और साइंस की रौशनी में

मुसन्निफ
नूरे निगाहे फहमी हज़रत ख्वाजा
शैख **मो. फारूक शाह** कादरी अलचिश्ती
इफतिखारी मारूफ पीर मद्दज़िल हुलआली

निजुमला होकुक बहक्के मुसन्निफ महफूज़ हैं

अरकान

किताब का नामः दिल की नमाज़
नोइयते इशाअतः बारे औव्वल
तादादे इशाअतः **500** सो
बमुकाए इशाअतः जश्ने गौसुल्वरा व ख्वाजा गरीब नवाज़ व सरकार पीर कामील आदिल बेजापूरी
तारीखे इशाअतः **28**, अप्रे 2012 बमुताबीक **6**, जमादिस्सानी 1433
ताबे व नाशिरः पीर मारुफ इनतिज़ामिया कमेटी
टाइपिंगः मो. कौने रज़ा.
मोब. **8655122754**
किमते किताबः **150/=** रुपये

<u>Publisher</u>
Maroof Peer Publication, Mumbai

किताब मिलने के पते

★ हज़रत पीर फहमी, खानकाहे कादरी अलचिशिती आदिल फहमी नवाज़ी। आदिल नगर, आकाश वानी गेट नं.७, मालोनी कालोनी, मलाड (वेस्ट) मुंबई-९५

★ हज़रत मारुफ पीर, खानकाहे फहमी नवाज़ी, भगत सिंघ नगर नं.१, लिंक रोड, गोरे गावँ (वेस्ट) मुंबई- १०४

★ अब्दुल्ला शाह कादरी, खानकाहे पीर मारुफ, गरीब नवाज़ नगर, कोकरी आगरा, एस, एम, रोड अंटॉपहील, मुंबई-३७

★ शैख शाहीन शाह कादरी हेदराबादी, खानकाहे पीर मारुफ। हाउस नं. ९-८-१०९/ए७६, गोल कुंडा, सालेह नगर, कुंचा, हेदराबाद।

★ सैय्यद मंसुर अली कादरी, पलॉट नं. ६४/सी, एम, एल, ए, कालोनी, रोड नं.१२, बंजार अहल, हेदराबाद

★ मो. मौला अली शाह कादरी, खानकाहे पीर मारुफ, बी२/१०/२ सेकट्र नं. १५, वाशी, नियू मुंबई- ७०३

★ मो. साजिद शाह कादरी, खानकाहे पीर मारुफ, हवाबी की चॉल, इदगाह मैदान, जोगेश्वरी (इस्ट) मुंबई-६०

★ मरकजे बेजापूर, इमरान कादरी, आसार गली, नज़्द रौशन दरवाज़ह, बेजापूर

INTERNET

OUR WEBSITE
www.maroofpeer.com
www.peerfehmi.com
www.peermaroof.com

OUR BLOGS ON BLOGGER
www.maroofpeer.blogspot.com
www.peermaroof.blogspot.com
www.sarkarmaroofpeer.blogspot.com
www.peerfehmo.blogspot.com
www.sarkarpeeraadilbijapuri.blogspot.com
www.sarkarbadshahquadeerallah.blogspot.com
www.hazratwatanshahqibla.blogspot.com

OUR BLOGS ON WORDPRESS
www.maroofpeer.wordpress.com
www.peermaroof.wordpress.com
www.sarkarpeerfehmi.wordpress.com

YOU TUBE CHANNELS
www.youtube.com/maroofpeer
www.youtube.com/peermaroof
www.youtube.com/sarkarmaroofpeer
www.youtube.com/sarkarpeermaroof
www.youtube.com/sarkarpeerfehmi
www.youtube.com/miracleofislam92
www.youtube.com/user/sufimuraqbah

ON FACEBOOK
www.facebook.com/maroofpeer92
www.facebook.com/peermaroof

EMAIL ID
maroofpeer@yahoo.com
peermaroof@yahoo.com
maroofpeer@maroofpeer.com
peermaroof@maroofpeer.com

फेहरिस्त

(१) इनतिशाब
(२) कलाम हजरत पीर आदिल बेजा पूरी र.अ.
(३) अफकारे सूफीया
(४) जवाब फतवा औव्वल
(५) जवाब फतवा दोम
(६) दौरे हाजिर
(७) काइमे नमाज
(९) अंबिया अलैहिस्सलाम की फिक्र
(१०) उम्मत के लिए बेहतरीन अमल
(११) जमान व मकान
(१२) शोउर और ला शोउर क्या है?
(१३) मेराजूल मुमेनीन
(१४) नमाज में होजूरे कल्ब
(१५) महबुबिन की नमाज
(१६) सरकारे दो आलम सल्लाहो अलैहे व सल्लम की नमाज
(१७) हजरते अबु बक्र रदिअल्लाहो अनहो की नमाज
(१८) हजरते उम्र रदिअल्लाहो अनहो की नमाज
(१९) हजरते उस्माने गनी रदिअल्लाहो अनहो की नमाज
(२०) हजरते अली रदिअल्लाहो अनहो की नमाज
(२१) हजरते हसन रदिअल्लाहो अनहो की नमाज
(२२) हजरते जेनुल्आबेदिन रदिअल्लाहो अनहो की नमाज
(२३) हजरते अनस रदिअल्लाहो अनहो की नमाज
(२४) हजरते अवेस करनी रदिअल्लाहो अनहो की नमाज

(२५) हजरते राबिया बसरी रदिअल्लाहो अनहो की नमाज
(२६) हजरते सुफयान सौरी रदिअल्लाहो अनहो की नमाज
(२७) हर मर्ज की दवा है
(२८) नमाज में ख्यालात की यलगार
(२९) आजान की अहमियत
(३०) तरीकत का वजू
(३१) वजू की साइन्सी तोजीह
(३२) हाथ धोना
(३३) कुल्ली करना
(३४) नाक में पानी डालना
(३५) चेहरा धोना
(३६) कहनीयों तक हाथ धोना
(३७) सर का मस्ह करना
(३८) गरदन का मस्ह करना
(३९) पैरों का मस्ह करना
(४०) अरकाने नमाज की साइन्सी वजाहत
(४१) नियत बांधना
(४२) सिने पर हाथ रखना
(४३) रुकु करना
(४४) सजदा और टेली पीथी
(४५) जलसा व कुउद
(४६) दुआ मांगने का तरीका
(४७) औकाते नमाज की वजाहत
(४८) फजर की नमाज

(४९) जोहर की नमाज
(५०) असर की नमाज
(५१) मगरिब की नमाज
(५२) इशा की नमाज
(५३) ख्वाब में पेशनगोइयाँ
(५४) नमाज और तंदुरुस्ती
(५५) बलेड परिशर
(५६) गठिया का इलाज
(५७) जिगर के अंराज
(५८) अल्सर का इलाज
(५९) जुम्ला दिमागी अंराज
(६०) चेहरे पर झरियाँ
(६१) जिन्सी अंराज
(६२) सिने के अंराज
(६३) नमाज जिक्र है
(६४) नामे अहमद शलके नमाज है
(६५) क्या आप जानते हैं?

इज्हारे तशक्कुर

मैं तमाम खुलफा-ए किराम व मुरिदीन व आशेकिन का तहे दिल से शुक्र गुजार हूँ जिन्हों ने मेरी हौस्ला अफजाइ और दामे, दिरमे, सुखने, कदमे, मेरी मदद की बिलखोसूस जनाब सैय्यद मंसुर अली कादरी व जनाब उसमान बिन सुलेमान कादरी का जिन्हों ने किताब हाजा की छपाइ में भरपुर जर्रे ताउन फरमाया। लिहाजा मैं तमाम मोसेनिन के लिए बारगाहे बे नियाज में दुआ गो हूँ कि अपने फैज व करम से नवाजे (आमीन)
फकत दुआ गोः खाकपाए पीर फहमी ख्वाजा शैख मो. फारुक शाह कादरी अलच्शिती इफतिखारी मारुफ पीर अफी अंहो

इनतिसाब

अलहमदो ल्लिाहे रब्बिल आलमीन, दोरुद हो सरवरे कौनेन सल्लाहो अलैहे व सल्लम पर और रहमतें बे शुमार हूँ औलिया-ए किराम व सोफीयाए इजाम पर जिनहों ने कुरबानी पेश की। जिस की वज्ह से आज इसलाम में ताबानियाँ हैं। और आज सूफियाए किराम के सिने में रौशनियाँ हैं।

किताबे हाजा का मकसद लोगों में सूफियाए किराम के खिलाफ फैली हुई बद गुमानियों को दुर करना है। और उलुमाए खुस्क को बे निकाब करना है। अल्लाह तआला अपने महबुबे पाक साहिबे लोलाक आका-ए नामदार मदनी ताजदार अहमदे मुज्तबा मोहम्मद मुस्तफा ﷺ के सदके में और तमाम औलियाए किराम के तुफेल इस किताब को कामयाबी व कामरानी अता फरमाए।(आमीन) अल्लाह तआला लोगों के दिलों में औलियाए किराम का अदब व इहतिराम और सूफीयाए किराम की मुकदस तालिमात से सिनों को रौशन करें ताकि इस रौशनी में

من عرف نفسه فقد عرف به

के मंजिलों को तै कर सकें। मैं यह किताब दिल की नमाज अपने पीर कामिल सुल्तानुत्तरीक गंजुल हकीकत बुर्हानूल मारुफ ताजुल औलिया पीर रौशन जमीर हजरत ख्वाजा शैख मो. अब्दुर्रऊफ शाह कादरी अलच्शिती इफतिखारी पीर फहमी मद्दजिल्लहुल आली दामत बरकातुहूम की बार गाहे विलायत में नज़्र करता हूँ।

गर कबुल उफतद जहे इज व शरफ

खाक पाए पीर फहमी ख्वाजा शैख मो. फारु शाह कादरी अलच्शिती इफतिखारी फहमी नवाजी मारुफ पीर अपी अंहू

कलामे हजरत पीर आदिल बेजा पूरी

पढ़ो नमाज मुसलमाँ चलो नमाज पढ़ो
लगाओ सिने से कुरआँ चलो नमाज पढ़ो

खुदा के हुकम की तामील सब करो बंदे
है आँख फिर भी मगर बन गए हो तुम अंधे

हराम माल कमाने के छोड़ दो धंदे
झुकाओ सर को तुम अपने चलो नमाज पढ़ो

मुसलमाँ नाम के हरगिज नहीं मुसलमाँ तुम
खुदा नबी का करो जिक्र सांस में हर दम

वगर ना रोजे कयामत करो गे तुम मातम
खुदा के खौफ से नादाँ चलो नमाज पढ़ो

अगर चे है तू मुसलमाँ तो मोमिन बन जा
खुदा के आगे सदा सर को झुकाए जा

मिटा के मैं को इबादत में नाम कर लेजा
तो होगा खुश मेरा यजदाँ चलो नमाज पढ़ो

कहा तू मान ले महताब जा शैख से जा मिल
अगर ना माने तो महफिल से चल निकल जाहिल

नबी के कलमे से रौशन तेरा नहीं दिल
यह बातें हैं जो मुसलमाँ चलो नामज पढ़ो

नमाजियों के घरों में खुदा की रहमत है
और बे अमल के घरों में सदा की लानत है

पीर आदिल की दिल में उलफत है
करो तिलावते कुरआँ चलो नमाज पढ़ो

(बहिवाला आइनए आदिल, स. १२९)

اقیموا الصلوٰة
अकिमुस्सलात

जो कलिमा गो हैं रखते हैं उल्फत नमाज से
मोमिन वही जो रखता हो न्सिबत नमाज से

मेराजे बंदगी कहते हैं जिसे अहले दिल
वह चिज हो गी तुझ को इनायत नमाज से

होती है खास रहमतें अहले सोजूद पर
फज्ल खुदा से बनती है क्सिमत नमाज से

जो बे नमाजी है वह मुस्लमान हीं कहाँ
इस्लाम की है शान सलामत नमाज से

है काबिले मिसाल नमाजी की जिन्दगी
छुटती है हर बुराई की आदत नमाज से

पढ़ता है जो नमाज जमाअत के साथ साथ
होती है उस के घर में भी बरकत नमाज से

पीर आदिल एक सज्दे में पूरी नमाज हो
तकमिल एसे हे बंदगी इबादत नमाज से

(बहिवाला कलामे मिज़ाने आदिल, सफहा.१२०)

अफकारे सूफीया

सूफीयाए किराम ने हर दौर में इस्लाम की जा खिदमत की है उस से इन्कार नहीं कीया जा सक्ता है। सूफीयाए किराम ने उन पहलों को भी खोला है जो कुरआने मजीद और हदीस शरीफ में मखफी थीं। जैसे कि सरकारे दो आलमे صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم ने फरमाया कुरआने मजीद के लिए मानी के दो पहलो हो ते हैं। एक जाहीरी मानी और एक बातीनी मानी। फीर बातीनी के लिए और एक बातीनी मानी फीर बातीनी के लिए और एक बातीनी। इसी तरह होजूर अकर صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم ने सत्तर (७०) मानी ब्यान फरमाए है।

औमाए खुश्क जिन की अकलें जाहीरी मानी को समझने से कासिर हैं। वह बातीनी मानी को क्या समझेंगे।

यह औलोमाए खुश्क जो चश्मे बातिन से कोरे होते है। जो बिला तहकीक व तसदीक सूफीयाए किराम को जिन अलकाब से नवाज ते है। वह अहले हक पर वाजेह है। यह किताब औलोमाए कुश्क की चश्मे कोर को दूर करने के लिए डराप (दवा) का काम करे गी।

बहर कैफ अकसर लोग लंबी टोपी पहन्ने वाले लंबी जुल्फें रखने वाले और लंबा जुब्बा पहन्ने वालूं को सूफी समझते है। इस तरह की खयाली तसवीर अपने जेहन में नक्श कर लेते हैं। मगर सूफी सरापा मोहब्बत का नाम है। सूफी का मजहब

मोहब्बत है। सूफी कोट पेंट में भी हो सकता है। हाँ यह जरूर है कि सूफीयाए किराम के लिबासे जाहिरा में भी कुछ राज पोशिदा जरुर है। गोया यह लिबास एक तरीका इमतिहान भी है कि जो शख्स सूफी बन्ना चाहता है वह कपड़े बदलने को त्यार नहीं है। तो अपनी रुहानीयत को क्या बदले गा। ऐसा नहीं है कि लंबी जुलफें लंबी टोपी और लंबा जुब्बा पहन कर सूफी अपनी मस्ती में मस्त रहता है। बल्की उसे दुन्या की हसती की भी खबर होती है। इसी लिए मेरी नजर में सूफी एक सो पर साइन्टिस भी होता है। इस बात को में ने अपनी किताबों से भी साबित किया है। हजरते मौलाना जलालुद्दीन रूमी र.अ. जो इस्लाम के बेहतरीन सूफी है। जिन्हों ने सब से पहले कुवते जाजिबा (Gravity) के बारे में लोगों को रोश्नास किया है। मगर लोग इस नजरिया को न्यू टन की खोज का नतीजा समझते हैं। जब कि हजरते मौलाना रुम र.अ. का जमाना आज से आठ सदी कब्ल का है। और न्यू टन को चार सो साल ही गुजरे हैं। अहले अक्ल अपने अक्ल की रोशनी में खूद फेसला करें कि कुवते जाजिबा का नजरिया किस का है। अब जरा हमारे औलोमाए कुश्क का भी तज्जिया करें। जब हजरते मौलाना रुम र.अ. ने कुरआन व हदीस की रोशनी में इन नजरियात को पेश किया तो आप की किताबें जलाइ गईं। आप की

शान में गुस्ताखी की गईं। हत्ता कि आप पर कुफ्र के फतवे तक लग गए। जब दहरिये (Communist) साइन्टिसों ने उनहीं नजरियात (Theories) को चिरा कर गैर मजहबी बना कर जब दुन्या को पेश किया तो गोलों ने उन को सर पर उठा लिया। उन के नामों को सुन्हरे होरुफ में नक्श किया गया। उनहें नोबल पराइज और नाजाने कितने खिताबों से नवाजा गया। स्कुलों और कॉलेजों में उन के नाम का सबक (Chapter)तक डाला गया। मगर किसी साइन्स की किताब जो स्कुलों और कॉलेजों में पढ़ाइ जाती हैं वहाँ पर हजरते मौलाना रुम र.अ. का नाम व निशान तक नहीं है। ऐसा क्यों?

दोरे हाजीर में औलोमाए खुश्क के दो फतवे बनाम सूफीयाए किराम आइद है।

फतवा औव्वल : यह सूफी बेनमाजी होते है।

फतवा दौम : यह सूफी दिल की नमाज पढ़ते हैं।

जवाब फतवा औव्वल: शरीअत मुत्तहरा का हुक्म है कि जो नमाज ना पढ़े वह गुन्हगार है। और जो नमाज का इन्कार करे वह काफिर ।

अल्हमदो ल्लिाह आज तक मेरी नजर से कोइ ऐसा

सूफी नहीं गुजरा जो नमाज का मुन्किर हो। हाँ! कोइ सूफी नुमा शैतान का मुरिद होगा जो नमाज का मुन्किर हो। इस मस्अला का जवाब बड़े ही अच्छे अंदाज में इमामे अहले सुन्नत आला हजरत अजीमुल बरकत मुजदद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह इमाम अहमद रजा खॉन फाजिले बरेलवी र.अ. के पीर व मुरशिद हजरत सैय्य आले रसूल अहमदी मारहरवी र.अ. ने किताब "शरीअत व तरीकत तरजमा सिराजुल अवारिफ फील्वसाया वल मोआरिफ " में फरमाते हैं। वाकिया यूँ है कि एक रोज (हजरत सैय्यद आले रसूल अहमदी मारहरवी र.अ.) से अज्र किया कि हजूर इस का सब्ब क्या है कि बाज पाबंदे नमाज फोकोरा यका यक नजाम छोड़ देते हैं और उन से इस बारे में पूछा जाए तो जवाब में यह आयते करीमा पढ़ देते है।

واعبد ربك حتى يأتيك اليقين

(तरजमा: और अपने रब की इबादत करो यहाँ तक कि तुमहें यकीन कामिल हासिल हो जाए) हजरत सैय्यद आले रसूल अहमदी मारहरवी र.अ. ने जवाबन इरशाद फरमाया कि उन का यह कौल बारे बैत (खाना पूरी के लिए) हो ता है। और लोगों से अपना दामन छुड़ाने के लिए यह कह दिया करते है वरना हकीकत यह है कि वह तरके नमाज के गुन्हाह से बहुत दूर हैं। और युं भी अहले इमान के साथ नेक गुमान

रखना चाहिए। जबकी हकीकतन हमारी निगाहों में तरके नमाज के वजोह मुताअद्दिद है। मसलन कभी जमाले इलाहि के मुशाहिदा में ऐसे मद होश हो जाता हैं कि उन से कलमे शरीअत उठ जाता है और कभी ऐसे वारिदाते अजीबीया का उन पर वरुद हो ता है कि वह दरयाए हैरत में गरक हो जाता है। और कभी तजल्लीय जलाल की वह शिद्दत हो ती है कि नमाज पढ़ने पर नहीं कुदरत ही नहीं रहती व अला हाजल क्यास। और फीर फरमाया (यानी सैय्यद आले रसूल अहमदी मारहरवी र.अ. ने) कि एक रोज सैय्यद अबू बकर शिबली कुद्दसा सिर्रहू बे हिजाबाना (किसी रोक टोक के बगैर) अपने शैख गिरामी हजरत सैय्येदिना जुनेद बगदादी र.अ. के मकान में दाखिल हो गऐ और उन के सरहाने खड़े खड़े नारा लगा ना और अश्आर पढ़ना शुरू कर दिया। हजरत सामी की परदा नशीं बी बीयों ने परदा करना चाहा तो आप ने इरशाद फरमाया उस की अभी हाजत नहीं कि शिबली इस वक्त आलमे हौश (हवास) में नहीं। कुछ देर के बाद हजरत शिबली इसी हालते बे खुदी में गिर पड़े और बहुत देर इसी हाल में रहे। यहाँ तक कि हजरत जुनेद बगदादी र.अ. ने आप की हालत पर तवज्ह फरमाइ और उनहें इस आलमे सक्रो मद होशी से आलमे सहू व होश्यारी की तरफ वापस लाए। हजतर शिबली ने रोना

शुरु कर दिया। उस वक्त हजरते जुनेद कुद्दसा सिरहू ने परदा नशीं अहले खाना से फरमाया कि तुम लोग परदा में चले जाओ कि वह इस आलम में वापस आरहे हैं।

गर्ज इन फोकोरा पर इंकिलाबे एहवाल की ऐसी ही वारेदात और तजल्लियात का बैश अज बैश वरुद रहता है और इस किस्म के एहवाल में एहकामे शरीअत की बजा आवरी उन से साकित हो जाती है। जैसा कि इसी हिकायत में गुजरा कि हजतरे जुनेद ने उस वक्त किसी परदे और हिजाब की जरुरत ना समझी।

फीर यह भी हो सकता है कि लोगों की निगाहों से मखफी हो कर तनहा नमाज आदा कर लेते हों। अल्बत्ता इस तौजीह में तरके नमाज बा जमाअत का कांटा दिल में खटतता है कि तनहा अदाएगी नमाज में जमाअत छुट ती है और यह भी फोकोरा के हक में नाजेबा हरकत है कि इस सुरत में सुन्नते मोअक्केदा बलकि औलोमा के नजदिक वाजिब का तर्क लाजिम आता है। लिहाजा वही पहली ताविलात अकरब एस्सवाब है। (यानी सैय्यद अबुल हुसैन नूरी र.अ. ने) फीर अर्ज किया कि यह इसतगराक व तय्यूर सिर्फ नमाज में होता है। बाखी औमूर में नहीं हो ता। मसलन खाने, पीने वगेरह में नहीं होता? तो इरशाद (सैय्यद आले रसूल अहमदी माहरहरवी र.अ.) ने कि क्या तुम ने नहीं

देखा कि मजनूँ किस तरह खाते पीते हैं। बात यह है कि नमाज के लिए अक्लो शोउर और तो मजनुनों के लिए उन के खाने पीने के बावजूद ओमोरे शरअीया में कलम जारी नहीं। ऐसा ही यहाँ समझना चाहिऐ।

واللہ اعلم بالصواب والیہ المرجع والمآب

बहरे हाल उनके हक में नेक गुमान रहना चाहिए। उन पर एतराज ना करना चाहिए। और यह भी एहतमाल है कि मक्का मोअज्जमा में नमाज बा जमाअत अदा करते हूँ। इस लिए कि उनहें अर्द यानी जमीनी मसाफत ते करने की कुवत हासिल हो। और मस्जिदे हराम में फजीलते नमाज (की दोलत) हासिल चाहिए हूँ कि वहाँ की एक रकअत दोसरी जगह की हजार रकअतों के बराबर सवाब रखती है।

और अगर तुम कहो कि अकसर यह देखने में आता है कि वह औकाते नमाज में अज औव्वल ता आखिर यहीं मोजूद रहते हैं। एक लमहा के लिए भी गायब ना होए तो वहाँ कैसे पहूँचे? तो मैं कहूँगा कि तुमहें क्या मालूम कि वह अपने जिस्मो सूरत में वहाँ गए और अपने जिस्मे जिल्ली व मिसाली के साथ कि वह जिस्मे अस्ली कि मुशाबह हैं यहीं रहे जैसा कि बारहा इस राह के मर्दाने खुदा से वकू में आया है। किस्सए मुख्तसर यह कि हुस्ने जन में बड़ी गुंजाइश है। देखए किसे हुस्ने जन की तौफीक देते और बद गुमानी की

बला से बचाते हैं। इलाही हमें भी हुस्ने जन की तौफीक अता फरमा।

(बहिवा शरीअत व तरीकत, तरजमा सिराजुल अवारीफ फील वसाया वल मोआरीफ। नूर नं. २९, सफा १०२)

जवाब फतवा दोमः कि यह सूफी दिल की नमाज पढ़ते है।

सूफीयाए किराम के हाल व हकीकत को जाने बगैर यह औलोमाए खुश्क सूफीयाए किराम को अपने फतवों का निशाना बना कर इस्लामी खुशगवार माहोल को खराब करने की कोशिश में लगे रहते हैं। इसी लिए मुजद्दिदे अल्फे सानी र.अ. ने अपने मकतुबाते इमामे रब्बानी जिल्द औव्वल सफा १८९ में फरमाते हैं कि किसी बुजुर्ग ने इबलिसे लईन को देखा कि फारिग और बेकार बेठा होवा है। उसका राज दरयाफ्त किया तो इबलिस ने बताया कि इस वक्त के औलोमा हमारे काम को अंजाम दे रहे हैं। और बहकाने और गुमराह करने के लिए काफी हैं (मकतुबाते इमाम रब्बानी) शैताने लईन भी आलिम था वह भी सैय्येदिना आदम अलैस्सिलाम के जाहिर से धोका खा गया। अगर उसने इल्मे मारिफत के समंदर से एक घोंठ भी पीया होता तो शायद उस का यह हाल ना होता। मगर मैं यह नहीं कहता कि हर आलिम शैताने लईन का शागिर्द है। बल्कि मेरे निशाने पर

वह औलोमाए सु हैं जो सूफीयाए किराम की सीरते मुकद्दसा को खराब करने में लगे हैं। जब कि आज पूरा आलम और हर मजहब व मिल्लत वाला सूफीयाए किराम की वज्ह से इस्लाम की ताजीम व तकरीम करता है। और मेरे आका व मौला सरकारे दो जहाँ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم को इज्जत की निगाह से देखता है।

अब जरा दिल की अस्ल व हकीकत को समझें और जाने और फैस्ला करें कि यह सूफीयाए किराम अपने बुजुरगों की रुश्दो हिदायत पर हैं या हट गए।

जहाँ दिल है वहाँ सब कुछ है
पहले मकामे दिल समझने की जरुरत है

कुत्बे रब्बानी महबुबे सुब्हानी शैखे मिराँ मोहिउद्दीन अब्दुल कादिर जीलानी गौसे आजम सम्दानी र.अ. अपनी तसनीफे शरीफा "सिरुल असरार" में फरमाते हैं कि

والصلوٰة الوسطیٰ

(अलबकरा२३८)

और (हिफजत करो) नमाजे दरमियान की। दरमियानी नमाज से मुराद कल्बी नमाज है। क्यों कि दिल को दाऐं बाऐं उपर निचे के एतबार से जिस्म के दरमियान में पैदा किया गया है। इसी तरह दिल सआदतो शकावत के भी दरमियान तखलीक हुवा है। जैसा कि सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم का

इरशादे गिरामी है।

القلب بين اصبعين من اصابع الرحمن يقلبها كيف يشاء

तरजमाः दिल रहमान की दो उंगलीयों के दरमियान है वह उसे जैसे चाहता है फैर देता है (बहिवाला सही मुस्लिम, किताबुल कदर)

दो उंगलीयों से मुराद कहर व लुत्फ है। क्यों कि अल्लाह तआला उंगलीयों से पाक है। इस आयत करीमा और हदीस मुबारका को दलील बना कर मालूम किया जासकता है कि अस्ली नमाज दिल की नमाज है।

जब कोई शख्स दिल की नमाज से गाफिल हो जाता है तो उस की दोनों नमाजें टुट जाती हैं। यानी दिल की नमाज भी और जवारह की नमाज भी।

لا صلوٰة الا بحضور القلب

तरजमाः होजूरे कल्ब के बगैर कोई नमाज नहीं। वज्ह यह है की नमाजी अपने रब से हमकलाम हो ता है। कलाम का महल दिल है। जब दिल गाफिल रहा तो नमाज बातिल ठहरी और जवारह की नमाज भी टुट गई। क्यों कि दिल अस्ल है और बाकी आजा उस के ताबे हैं। जैसा कि नबीए करीम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم का फरमाने मुबारका है

الا ان فی الجسد مضغة اذا صلحت صلح الجسد كله واذا فسدت فسد الجسد كله الا وهی القلب

(सही बुखारी, किताबुल ईमान)

तरजमाः हाँ हाँ! जिस्म में गोश्त का एक टुकरा ऐसा भी है

कि अगर सही हो जाए तो सारा बदन सही हो जाए। और अगर बिगड़ जाए तो पुरा जिस्म बिगड़ जाए जाए। याद रहे! गोश्त का वह टुकरा दिल है। आगे फरमाते है कि यह नमाज पूरी जिन्दगी को मोहीत हो ती है। उस की मस्जिद दिल है। और जमाअत यह विद्र जाहेरी जबान से नहीं बातिन की जबान से किया जाए। इस नमाज में इमाम ईश्क हो ता है। जो जान के मेहराब में खड़ा हो ता है। इस नमाज का किब्ला हजरते अहदीत और जमाले समदियत है और यही अस्ली काबा है।दिल और रुह अलद्दवाम इस नमाज को अदा करते हैं। दिल ना तो सोता है और ना मरता है। वह निंद और बेदारी दोनों हालतों में हयाते कल्बी के साथ बिला सोत क्याम और कोउद इस नमाज की अदाईगी में मशगुल रहे।(बहिवाला सिररुल असरार, सफा १५८,१५९ ।१६०)

हजरते शैख महमुद आफंदी असकदारी आयत

واقم الصلوٰۃ ان الصلوٰۃ تنھیٰ عن الفحشاء والمنکر

(अलअंकबुत, सफा ४५)

के बारे में फरमाते हैं कि बदनी नमाज मासियात और सएइयात शरीआ से बचाती है।और नफ्स की नमाज रजाईल और इवलाके रद्दीया से बचा ती है। जब कि सिररी नमाज इलतिफात एलल गैर से भी महफूज रखती है रुह की नमाज सर कशी से बचा ती है और यह नमाज सिफात के

जरिए दिल के वजू से अदा होती है। जिस तरह दिल की नमाज जोहुरे नफ्स से उसे पाक कर के अदा की जाती है। नमाजे खफी दोई और जोहुरे अना नियत से। जब कि जात की नमाज تلوّن के साथ जोहुरे बकीया से महफुज रखती है जिसने यह नमाजें अदा करलीं वह तमाम गुनाहों और खताओं से खुलासी पा गया। (बहिवाला सिररुल असरार, १६२)

शैखुल इस्लाम मुफस्सिरे कुरआन हजतर अल्लामा व मौलाना शैख मो. इसमाईल हक्की र.अ. अपनी तफसीर रुहुल बयान सोरए अंकबुत आयत नं. ४५ की तफसीर कि नमाज बुराइ और बे हयाई से रोकती है में फरमा ते है कि

(१) बदन की नमाज अरकाने मालूमा हैं।

(२) नफ्स की नमाज खोशु और खौफ व रिजा के दरमियान इतमिनान से।

(३) और कल्ब की नमाज होजुर व मुराकिबा से।

(४) और सिर की नमाज मुनाजात व मुकालेमात से।

(५) और रुह की नमाज मुशाहिदा व मोआइना से।

(६) और खफी की मुफागात व मुलातेफत से।

और सातवीं मकाम में नमाज होती ही नहीं क्यों कि वह मकाम फना है। और मोहब्बते खालेसा नसीब हो तो इन्सान को अैने वहदत हासिल हो जाता है। नमाज के जाहिर की इनतिहा मौत है जिसे कुरआन ने यकीन से

ताबीर किया

كما قال الله تعالىٰ واعبد ربك حتى ياتيك اليقين

यहाँ पर अलयकीन बमानी मौत है। और नमाजे हकीकी की इनतिहा फनाए मुतलक है जिसे अहले तसौवफ हक्कुल यकीन से ताबीर करते हैं। खुलासा यह है कि हर नमाज जाहेरी हो या बातिनी मरतबए जाहिर व बातिन के फहशा व मुंकर से रोक ती है। बदन की नमाज मआसी व मलाहीन से और नफ्स की नमाज रजाईल व अलाईक व इवलाक रद्दिया वहहियाते मुजलेमा से और नमाजे दिल फोजूल वफूरे गफलत से और सिर इतिफाते मा सेवाए हजरत को और नमाज रुहे इसतकरा बमुलाहिजाए अगयार से और नमाजे खफी शोहूद इसनिनीयत व जोहूर से मना करती है।

(बहिवाला, तफसीरे रुहुल बयान, जिल्द ११, पारा २१, स.१०)

पारा २ सुरए बकरा आयत २३८ والصلوٰة الوسطیٰ

की तफसीर में फरमाते हैं कि नमाज पर मोहाफेजत करो सिदको एखलास और होजूरे कल्ब और खोशू व खोजू और इज्ज इन्किसार के साथ मुनाजात कल्ब की मोहाफेजत कर के उसी से इतिआनत और उसी से हिदायत तलब करो। सोकुन व वकार और हैबत व ताजीम और दवाम शोहूद के लिए उसी को सलाते उस्ता कहते हैं। इस लिए कि वह इन्सान के वस्त में वाके है क्यों कि वह रुह और जिस्म के दरमियान

वास्ता है। इस लिए उसे सलातुल कल्ब कहा जाता है। और जिस नमाज की मोहाफेजत का हुक्म है वह यही सलातुल कल्ब है। जिस पर दाएमी तौर पर शोहूद हो। इस लिए कि जिस्म तो कभी अरकाने नमाज के जाहेरी मसाइल पर मोहाफेजत करता है। लेकिन कभी उनहें तर्क भी कर देता है इस लिए उसे मोहाफेजत की सिफत से मोसूफ नहीं किया जा सकता और ना ही उसे होजूर व शोहूद के वस्फ पर उस के मानी की मोहाफेजत की जा सकती है। इसी किए कि यह कल्ब की शान है कि वह इस तरह उस की मोहाफेजत करे जैसे होजूर व शोहूद का हक है।

पारा २९, सुरए मआरिज, आयत २२,२३

الا المصلين الذين هم على صلاتهم دائمون

की तफसीर में फरमाते हैं कि ताविलात नजमीया मै है कि इस में सलातुन नफ्स की तरफ इसारा है। यानी उस का मुखालेफत शरईया से तजकिया और सलातुल कल्ब की तरफ इसारा है। यानी उस का मिलान एलद्दुन्याँ और उस की शहवात और नक्श व निगार से तसफिया और सलातुल्लाह की तरफ यानी उस का रोकून (झुकाओ) मकामात इल्लिया व मरातिबे सफिया से तखलिया और सलातुर्रुह की तरफ यह मुकाशेफाते रब्बानिया व मुशाहेदाते रहमानिया से होती

है। और मोआईनाते हक्कानिया से अदा होती है। और सलातुलखफी की तरफ और यह फनाफिहक और बका बिल हक से अदा होती है। और कामेलीन ऐसी नमाजों पर मुदावेमत करते हैं।

(बहिवाला रुहुल बयान, जिल्द १५, पारा २९, सुरए मआरिज, आयत २२,२३, सफा २२०)

तफसीरे नईमी जिल्द दोम सफा ४७३, والصلوٰۃ الوسطیٰ की तफसीर में हकीमुलउम्मत हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ्ती अहमद यार खान नईमी र.अ. फरमाते हैं कि दिल की नमाज नमाजे उस्ता है। क्यों कि दिल बदन इन्सान के बीच में है। नीज दिल, रुह व जिस्म के दररिमयान वास्ता है बदन की नमाज तो सलाम पर खतम हो जाती है मगर दिल की नमाज कभी खतम नहीं होती। दिल वालों की यह शान है कि انھم فی صلاتھم دائمون महद (हगवारा)से लेहद तक हमेशा नमाज ही में रहते हैं। सलेकिन को चासिए कि कोबूर में जाने से पहले हरम होजूर में पहुँचें। क्यों कि फोतूर की नमाज अल्लाह गोयूर के यहाँ कोबूल नहीं। नमाज का कमाल है कि माद्दी काईनात से बे खबर हो जाए। अल्लाह एसी ही नमाज नसीब फरमाए। नमाजें पाँच हैं।

(१) नमाजे सिररी जिस में मुशाहेदए गैब है।

(२) नमाजे नफ्स जिस्म से नफ्स की खाहिशात बुझ जाऐं।

(३) नमाजे कल्ब जिस में अनवारे कश्फ जाहिर हूँ।

(४) नमाजे रुह जिस में विसाल हूँ।

(५) उस में मसिवा अल्लाह से पाकी शर्त है। और तवज्ह एलल्लाह उस का रुक्न है। यह नमाज खतरात और काबाए ज़ात से फिर जाने पर फासिद हो जाती है। और रब के सामने ज़ाहेरी व बातिनी अताअत करते हुवे खड़े हूँ। अगर तुम्हें राहे तरीकत में सदमाते जलाली से डर लगे तो सिदक व यकीन के कदम या अज़म व इरादा की सवारी पर नमाज़े कल्ब अदा करते हुवे जाओ और जब मकसूद पर पहुँच कर यह खोफ दूर हो जाए तो फिर फना की नमाज़ हस्बे हिदायत पढ़ो। जिस में तुम ही तुम हो। किसी ने मजनू से पुछा कि लैला तुमहारी है। बोला कि में खुद लैला हूँ (रुहुल बयान) सूफीया फरमाते हैं कि नमाज़े बदन। बदन की हालत में बदन को दुन्यावी मशागिल खाने पीने, कलाम सलाम से बचाया जाता है। और नमाज़े नफ्स को दुन्यावी ख्वाहिशात से महफूज रखा जाता है। और नमाज़े दिल में दिल की मोहब्बत मासिवा अल्लाह से और नमाज़े रुह में जान को मासिवा अल्लाह से और नमाज़े सिर में अपनी हसती को खत्म कर दिया जाता है। नमाज़े बदन तकबीरे तहरीमा पर शुरु हो कार सलाम पर खत्म हो जाती है। मगर दोसरी नमाज़ें दिल व नफ्स वगेरह की ज़िन्दगी खत्म होने पर और

नमाज़े रुह कभी खत्म नहीं होती। ना रुह को फना है ना उस की नमाज़ की इन्तिहा। (बहिवाला, तफसीरे नईमी,जि.२, स.४७३)

ख्वाजए ख्वाजगान फखरे हिन्दुस्तान हज़रत ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती संजरी अलमारुफ बीह गीब नवाज़ र.अ. अपनी तसनीफे शरीफा गंजुल असरार तरजमा असरारे हकीकी में फरमाते हैं कि नमाज़े हकीकी के मुताअलिक होज़ूर पुर नूर صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने इरशाद फरमाया ए उमर!

لاصلوٰۃ الابحضور القلب

यानी नमाज़े हकीकी से मोमिने कामिल और आरिफे इलाही को होज़ूरी दाएमी हासिल होती है। नीज़ होज़ूर अलैस्सिातो वस्सलाम ने फरमाया कि वह नमाज़ दो किस्म की होती है। एक नमाज़े औलामा व फोकोहे ज़ाहेरी और ज़ाहेदाने खुश्क की जो सिर्फ़ कौलो फेल तक ही महदुद होती है। और उस से विसाले इलाही हासिल नहीं होता यही वज्ह है कि उस की रेसाई भी आलमे मल्कूते नफ्सानी तक महदूद रहती है। दोसरी नमाज़ अंबिया और औलीया और खोल्फा की जो होज़ूरे कल्ब से अदा की जाती है। उस का समरा विसाले इलाही है। और उस की रेसाई आलमे जबरुते रहमानी तक होती है।

ए उमर! नमाज़े हकीकी दर अस्ल यही रहमानी है।

वरना नमाज़ जो औव्वामुन्नास ज़ाहेरी तौर पर बिला होज़ूरे कल्ब अदा करते हैं यह नमाज़ नफ्सानी है, रहमानी नहीं है। नबीए अकरम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم का इरशाद है कि

من صلیٰ صلوٰۃ طویلۃ فی المسجد وزین البدن بالعمامۃ فی ناظر الخلائق

وما کان فی قلبہ من عجز فھو محجوب ولا صلوٰۃ ولا وصال

सिका मतलब यह है कि औलामाए ज़ाहिर पस्त्रत और सूफीयाने रिया कार खुब जुब्बा व दस्तार बांध कर ज़ाहेरी शान व शौकत और ठाठ बना कर महज़ रिया कारी की नमाज़ पढ़ते हैं। उन के नफ्से नगरुरी और खुद पसन्दी की नफ्सिानीयत में घिरे हैं। ऐसी नमाज़ क्या हकीकत रखती है। क्यों कि यह लोग नफ्स के बन्दे है। और नफ्सानी आदमी दर अस्ल शैतान बलाकिब इन्सान हो ता है। और शैतान बिलइतिफाक काफिर और गुमराह है। पस नतीजा यह बर आमद होवा कि ऐसे लोग दर हकीकत गुमराह और काफिर हैं। उन्हें चाहिए कि किसी मुरशीदे कामिल की सोहबत में रह कर अपने दिल को गोरुरे नफ्सानीयत के खस व खाशअक से पाक व साफ करें। और मारिफते इलाही से मामूर और आबाद बनाऐं ता कि वह सही मानों में इन्सान बन जाऐं। और गुमराही से निकल कर राहे रास्त पर आ जाऐं। जब ही उन की नमाज़ हकीकी नमाज़ होगी। और खुश किस्मती से ऐसा हकीकी नमाज़ी हज़ारों लाखों में से

एक आध तो उस की खिदमत व सोहबत अकसीरे अहमर से बदर जहा बेहतर है (मुतरजिम)

यह गुमराह दर अस्ल बुत परस्त हैं। और फिर ताअज्जुब है कि यह अपनी परस्ती पर नाज़ाँ भी हैं। और वह लोग भी अजीब कोरे बातिन और नादाँ है। जो ऐसे रिया कारों को नमाज़ी शुमार करते हैं। ऐसे बे हकीर नमाज़ से क्या फाइदा? हदीसे कुदसी है

الانبیاء والاولیاء یصلون فی قلوبھم دائمون

यानी अंबिया और औलीया हमेशा होज़ूरे कल्ब से नमाज़ पढ़ते हैं (यानी नमाज़े हकीकी)

नबीऐ करीम صلی اللہ علیہ وآلہٖ وسلم ने फरमाया

صلوٰۃ الانبیاء والاولیاء حبس الحواس وعدد الانفاس

यानी अंबिया और औलीया की नमाज़ दर हकीकत वह नमाज़ होती है कि जब वह नमाज़ में खड़े होते हैं बल्कि हर वक्त ही उन के हवासे खम्सा गैरुल्लाह से बंद हो जाते हैं। और उनका हर एक एक सांस यादे इलाही में गुज़र ता है। वह अपने एक एक सांस का खयाल व शुमार रखते हैं कि कहीं ग़फलत में ना गुज़र जाए। यही लोग दर अस्ल नमाज़ी हैं। ऐ उमर! नमाज़े हकीकी रहमानी सै। इसी नमाज़ से परवर दिगारे आलम का विसाल होता है।

ए उमर! अंबिया औलीया ज़िक्र खफी में रहते हैं नबी अलैहिस्सलाम ने इरशाद फरमाया है

ذکر اللسان لقلقة وذکر القلب وسوسة وذکر الروح مشاهدة
وذکر الخفی دائماً

यानी ज़बानी ज़िक्र गोया लकलका है। और कल्बी ज़िक्र एक किस्म का वस्वसा है और रुहानी ज़िक्र मुशाहेदा इलाही का मोजिब है। ज़िक्र खफी हमेशा होवा करता है। ए उमर ज़िक्र खफी और नमाज़े हकीकी तरक वजूद है। आबिदों की नमाज़ सज्दा और सोजूद पर मबनी है।

नमाज़े ज़ाहेदाँ सज्दए सोजूद अस्त,, नमाज़े आशिकाँ तरके वजूद अस्त।

यानी अल्लाह अज़्ज़ा व जल के सिवा किसी को मोजूद ना समझना। गैरुल्लाह का वजूद दिल से बिल्कुल निकाल देना। (बहिवाला, असरारे हकीकी, स-१४,१५,१६,१७)

दोरे हाज़ीर

यह दौर अक्लो शोउर के एतबार से बालिग दौर है। अब से पचास साल पहले जो बात साइन्सी नुकतऐ नज़र से पचास साल के बुजुग्र नहीं जानते थे वह आज दस बर्स का बच्चा जानता है। ईलमो आगही इस नुकतए उरुज पर है।

जहाँ इन्सान खला (Vpace) में चहल कदमी करने का दावा करता है। आवाज़ के कतरे (Volume) कम या ज़िया कर के हज़ारों मील का खयाल तसव्वुर बन गया है। फासले सिमट गए हैं। जो सफर दिनो और सालों में पुरा हो ता था अब मिंटों और घंटों की गिरफ्त में आगया है। नत नई इजादात ने हमारे उपर यह राज़ खोल दिया है कि इन्सान के दिमाग़ में खरबों खलऐ (Cells) काम करते हैं। और हर खलीया अपनी पुरी तवानाइयों के साथ इन्सान के अन्दर एक तखलीकी सलाहियत रखता है। यह माहौल इल्मी, साइन्सी और खुद आगाही का माहौल है। इस माहौल में कोई बात उस वक्त काबिले कोबुल हो ती है जब उसे साइन्सी फॉरमोलों और फितरत के कावानीन के मुताबिक दलील के साथ पैश किया जाए।

दिल की नमाज़ उसी ओसूल को सामने रख कर तरतीब दी गई है। में ने कोशिश की है कि इस किताब मे अस्सलातो मेराजूल मोमेनीन का साइन्सी मफहूम और कानूने कुदरत के फॉरमोलों की वज़ाहत हो जाए ताकि मगरीबी उलूम से मुताअस्सिर मोजूदा नस्ल से फाइदा उठा सके।

नमाज़ इल्मो आगाही के समन्दर में से मखफी

खज़ानों को ज़ाहिर कर के मसाईल व मुशकिलात का हल पेचिदा और ला इलाज बीमारियों का शाफे इलाज पैश करती है। नमाज़ हमारे उपर गैब की दुन्या के दरवाज़े खोल देती है। सही तरीके पर नमाज़ अदा कर के फरिशतों से हम कलामी हमारे लिए एक आसान अमल बन जाता है। खौफ व दहशत में मुबतला अदमे तहफ्फुज के एहसास में स्सिकती होई और मसाईब व आलाम में गिरफतार नौए इन्सानी के लिए नमाज़ एक लाहऐ अमल है। जिस पर अमल पैरा हो कर हम अपना खोया होवा ईतिदार दोबारा हासिल कर के ज़िन्दा कौमों की सिफतों में मुमताज़ मकाम हासिल कर सकते हैं। नमाज़ के ज़िम्न में मैं यह बात अर्ज़ कर देना ज़रुरी है। जिन में होजूरे कल्ब ना हो। बन्दे के लिए इनफिरादी तौर पर महरुमी और इजतिमाई तौर पर बोझ बन जाती है। जैसा कि अल्लाह तबारक व तआला कुरआने मजीद में इरशाद फरमाता है।

فویل للمصلین الذین ھم عن صلاتھم ساھون

तरजमाः खराबी है उन नमाज़ीयों के लिए जो अपनी नमाज़ से बे खबर हैं।

दुआ है कि अल्लाह तआला अम्मतुल मुस्लेमिन को सही नमाज़ अदा करने की तौफीक अता करे और सरकारे दो जहाँ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم के इरशादे आली الصلوٰۃ معراج المومین के मुताबिक

नमाज़ के ज़रिए हमें अल्लाह का ईरफान हासिल हो।

(आमीन)

اقم الصلوة
काईम नमाज़

नमाज़ उस मखसूस ईबादत का नाम है जिस में बन्दे का अपने खालिक के साथ बराहे रास्त एक रब्त और ताअल्लुक काईम हो जाता है। नमाज़ अरकाने इस्लाम में वह रुक्न है जिसे कोई बाहौश व हवास मुस्लमान किसी हालत में नहीं छोड़ सकता। कुरआने पाक में कई जगह अकीमिस्सलात यानी नमाज़ को काईम करने की ताकीद की गई। जिस से इस अहम इस्लामी रुक्न की फजीलत, अजमत व जलालत और अहमियत का बा खूबी अन्दाज़ा हो ता है। इबादात में नमाज़ को एक मरकजी हैसियत हासिल है। यह बन्दे को एक ऐसी रुहानी कैफीयत से आशना करती है जिस से बन्दा अपनी और अपने माहौल में मोजूदा हर चिज़ की नफी कर के अल्लाह तआला की होज़ूरी हासिल करता है। नमाज़ इन्सान के बातिनी हवास के लिए एक पासबान की हैसियत रखती है। और लोगों में इजतेमाई नज़्म व ज़ब्त की तशकील करती है। नमाज़ के एवलाकी तमद्दुनी मोआशेराती ज्सिमानी व रुहानी बे

शुमार फवाइद हैं। इजतेमाई नमाज़ की पाबंदी बा हमी तअल्लुकात में मज़बुती पैदा करती है।

सलात (नमाज़) अरबी ज़बान का लफ्ज है। उस के मानी दरूद, दुआ, तसबीह व तहलील, इसतिगफार, रहमत, नेमत, बरकत, तारीफ और तलबे रहमत के हैं। नमाज़ के मानी ताज़ीम के भी हैं। यानी नमाज़ उस इबादत का नाम है जिस में अल्लाह तआला की तारीफ, बड़ाई और ताज़ीम बयान करना मकसुद है। नमाज़ को ठीक तरिके पर अदा करना औव्वलीन रुक्ने दीन है। कोबुलियते नमाज़ से दीन व दुन्या की सारी सर बलंदीयाँ हासिल हो जाती है। कुरआने पाक के तालीम के मुताबिक हर पैगमबरे इस्लाम ने अपनी उम्मत को अकीमिस्सलात यानी नमाज़ काईम करने की ताकीद की। मिल्लते ईब्राहीमी में उस की हैसियत बहुत मुमताज़ है। हज़रते ईब्राहीम अ.म.ने जब अपने साहिब ज़ादे हज़रते इस्माईल अ.म. को मक्का की वीरान सर ज़मीन में आबाद किया तो उस की ग़र्ज़ यह बताइ कि ربنا ليقيموا الصلوٰة (सुरए ईब्राहीम, आयत ३७)

तरमजा: ए मेरे रब इस लिए कि वह नमाज़ काईम रख्खे। हज़रते ईब्राहीम अ.म. ने अपनी और अपनी नस्ल के लिए यह दुआ की رب اجعلنی مقیم الصلوۃ ومن ذریتی (सुरए ईब्राहीम आयत, ४०)

तरजमाः ऐ मेरे रब मुझे और मेरी नस्ल को नमाज़ का काईम रखने वाला बना। हज़रते इसमाईल अ.म. के बारे में कुरआने पाक का ईरशाद है وکان یامر اھلہ بالصلوۃ والزکوۃ (सुरऐ मरय, आयत ५५)

तरजमाः और वह अपने अहलो अयाल को नमाटज और ज़कात का हुक्म देते थे।

हज़रते लुत अ.म. और उनकी नस्ल के पैग़म्बरों के मुताअल्लिक कुरआने मजीद का ईरशादा है

واوحینا الیھم فعل الخیرات واقام الصلوۃ (सुरऐ अंबिया, अ. ७३)

तरजमाः और हम ने उनहें वही भेजी अच्छे काम करने और नमाज़ काईम करने की।

हज़रते लुक्मान अ.म. ने अपने लखते जिगर को यह नसीहत फरमाइ یبنی اقم الصلوۃ وامر بالمعروف (सुरऐ लुक्मान, आयत, १७)

तरजमाः ए मेरे बेटे नमाज़ काईम रख और अच्छी बात का हुक्म दे। अल्लाह तआला ने हज़रत मुसा अ.म. से फरमाया واقم الصلوۃ لذکری (सुरऐ ताहा, आयत, १४)

तरजमाः और मेरे ज़िक्र के लिए नमाज़ काईम रकह।

हज़रते ईसा अ.म. कहते हैं واوصنی بالصلوۃ والزکوۃ (सुरऐ मरयम, आयत ३१)

तरजमाः और मुझे नमाज़ और ज़कात की ताकीद फरमाई

कुरआने मजीद से यह भी साबित हो ता है कि इस्लाम के ज़माने में भी अरब में बाज़ यहुदी और इसाई अकिमीस्साल थे। ومن اھل الکتب امۃ قائمۃ یتلون آیت اللہ اناء الیل اھم یسجدون

(सुरऐ आले इमरान, आयत.११३)

तरजमाः अहले किताब में कुच्छ लोग ऐसे भी हैं जो रातों को खड़े हो कर खुदा की आयतें पढ़ते हैं और सजदा करते है।

والذین یمسکون بالکتب واقاموا الصلوۃ انا لا نضیع اجر المصلحین

(सुरऐ आराफ, आयत, १७०)

तरजमाः और वह जो किताब को मज़बुती से पकड़ते हैं और वह नमाज़ काईम रखते है. हम उनके अर्ज को ज़ाए नहीं करते।

इन आयाते तैयेबात की रौशनी में अकिमीस्सलात की अहमीयत वाज़ह हो जाती है। और हम ने यह भी बताया कि नमाज़ के एक मानी रहमत के भी हैं। यानी नमाज़ अल्लाह तआला की रहमत के होसूल का एक ज़रीया है। आकाए नामदार मदनी ताजदार सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ والہ وسلم का यह बहुत बड़ा एजाज़ है कि आप صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने अपनी उम्मत और बनीए नोए इन्सानी के लिए होसूल व रहमत का एक ऐसा तरीका अता फरमाया है। जिस तरीके में इन्सानी ज़िन्दगी की हर हरकत में अल्लाह तआला की रहमत के

साथ वाबस्ता रहे। हम जब नमाज़ के अन्दर हरकातो सकनात का मुताअला करते हैं। तो बात पुरी तरह वाज़ह हो जाती है कि इन्सानी ज़िन्दगी की कोइ हरकत ऐसी नहीं है कि जिस को होज़ूर नबीए करीम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने नमाज़ में शामिल ना कर दिया हो। मसलन हाथ उठाना, बलंद करना, हाथ हिलाना, हाथ बांधना, हाथों से जिस्म को छुना, खड़ा होना, झुकना, बैठना, बोलना, देखना, सुन्ना, सर घुमा कर इदार उदार सिम्तों का ताय्युन करना। गर्ज़ ज़िन्दगी की हर हालत नमाज़ के अंदर मोजूद है। मकसद वाज़ह है कि इन्साना ख्वाह किसी भी काम में मसरूफ हो या कोइ भी हरकत करे उसका ज़ेहन अल्लाह तआला के साथ काईम रहे। और यह अमल आदत बन कर उस की ज़िन्दगी पर मोहीत हो जाए हत्ता कि हर आन हर लम्हा और हर सांस में अल्लाह के साथ उस की वाबस्तगी यकीनी अमल बन जाए।

हम जब नियत बांधते हैं तो हाथ उपर उठा कर कानों को छुते हैं। और फिर अल्लाहो अकबर कहते हुवए हाथ बांध लेते हैं। नमाज़ शुरू करने से पहले यह बात हमारी नियत में होती है कि हम यह काम अल्लाह के लिए कर रहे हैं नियत का तआल्लुक दमाग़ से है। यानी पहले दमाग़ी और ज़ेहनी तौर पर खुद को अल्लाह तबारक व तआला के होज़ूर पैश करते हैं। इबतदाए पैदाईश से अब तक कितनी बी

इजादात और तरक्कीयात होई हैं। उन का तआल्लुक दमाग़ से है और उसके बाद हाथों से। जब हम नमाज़ के लिए हाथ उठाते हैं। और अल्लाह तआला की अज़मत का इकरार करते हैं तो उस का मफहुम यह हो ता है कि हम अपनी तमाम ज़ेहनी और दमाग़ी सलाहियतें और तरक्की व इजादात का रिशता अल्लाह तआला के साथ काईम कर देते हैं। यानी यह कि नोए इन्सानी से जो इजादात वजूद में आई है या आऐंगी उनका तअल्लुक उन सलाहियतों से है जो अल्लाह तआला ने हमें अता की हैं। हम सना سبحانك اللهم पढ़ कर अल्लाह तआला की पाकीज़गी बयान करते हैं और इस बात का एतराफ करते हैं कि हमारे अंदर बोलने और बात करने और सोचने और समझने की जो सलाहियतें मोजूद हैं वह दरअस्ल अल्लाह तआला का एक वस्फ है। और हमारे उपर अल्लाह तआला का इनआम है।

अल्हमदो शरीफ (सुरए फातिहा) पढ़ कर हम अपनी नफी करते हैं। और इस बात का इकरार करते हैं कि तमाम तारीफें अल्लाह तआला ही को ज़ेब देती हैं। और वही हमें हिदायत बख्शता है। और उसी के इनआमो इकराम से फलाह याफ्ता हो कर हम सिराते मुस्तकीम पर गामज़न हैं। अल्हमदो शरीफ के बाद हम कुरआने पाक की कोइ सुरत तिलावत करते हैं। मसलन قل هو الله احد शरीफ (सुरए इख्लास

पढ़ कर बरमला इस बात का एतराफ करते हैं कि अल्लाह एकता है और मखलूक एकता नहीं है। वह किसी का मोहताज नहीं और सब उसके मोहताज हैं। अल्लाह तआला ना किसी का बेटा और ना किसी का बाप है। अल्लाह तआला की ज़ात मुनफरिद है और एकता है। वाहिद है और ला इन्तिहा है। गैर मुतगैयिर है। और उस का कोइ खानदान नहीं। अब हम अल्लाह तआला की बड़ाई का इकरार करते होवऐ झुक जाते हैं और फिर खड़े हो जाते हैं। खड़े होने के बाद ऐसी हालत में चले जाते हैं जिस हालत को लेटने से करीब कहा जा सकता है। फिर उठ कर बैठ जाते हैं। फिर सजदे में चले जाते हैं। फिर उठ कर खड़े हो जाते हैं। आखरी रकअत में काफी देर निहायत सोकुनो आराम से बैठ कर इधर उधर सलाम फैर देते हैं। ग़ौरो फिक्र का मकाम है कि नबीए करीम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने ज़िन्दगी में हर वह हरकत की है जो इन्सानों से सरज़द होती हैं। सब की सब नमाज़ में समोदी हैं मकसद यही है कि इन्सान कुछ भी करे किसी हाल में रहे उठठे, बैठे, झुके, कुछ बोले इधर उधर देखे हाथ पैर चलाए कुछ सोचे हर हालत में उस का कल्बी व ज़ेहनी रब्त अल्लाह तआला के साथ काईम रहे। कुरआने पाक में नमाज़ काईम करने की हिदायत की गई है। यह नहीं कहा गया कि नमाज़ पढ़ो।

انبیاء علیہم السلام کی فکر

अंबिया अलैहिस्सलाम की फिक्र

कानुन यह है कि जब तक हमारी फिक्र अपनी पूरी सलाहियतों और अपनी तमाम तर तवज्ह के साथ एक नुकते को तलाश ना करले और हमारी फिक्र किसी एक जगह पर काईम ना हो जाए हम उस चिज़ के सही मफहुम और मानवीयत से बे खबर रहते हैं। दमाग़ी इनतिशार और ख्यालात की यलग़ार के साथ हम कोई भी काम करें। उस का सही नतीजा मुरत्तब नहीं होता। दरअस्ल किसी चिज़ के अंदर उस का वस्फ और उस वस्फ में मानवीयत से ही कोई नतीजा मुरत्तब होता है। मसलन पानी से प्यास इस लिए बुझ जाती है कि पानी का वस्फ खुश्क रगों को सैराब करता है। आग से खाना इस लिए पक जाता है कि आग का वस्फ यह है कि वह अपनी गरमी से चिज़ों को गला कर काबिले हज़्म बना देती है। जब तक हमारे ज़ेहन में फीलवाके किसी चिज़ का वस्फ और मानवीयत मोजूद नहीं होता। हम उस चिज़ से कोई फाइदा हासील नहीं कर सकते। नमाज़ की हिकमत और मानवीयत पर अगर ग़ौर किया जाए तो एक ही बात वज्ह तसकीन बनती है कि नमाज़ अल्लाह तआला से करीब होने का और अल्लाह तआला को पहचान्ने का एक मोअस्सिर और यकीनी ज़रीया है। लेकिन किसी चिज़ से

करीब होना किसी चिज़ को पहचान्ना उस वक्त मुम्किन है। जब तक आदमी उस चिज़ की मानवीयत में खुद को गुम ना करदे उस वक्त तक वह उस चिज़ से वाकिफ नहीं होता और मानवीयत में गुम हो जाना उस वक्त मुम्किन है जब अक्लो फहम और सोच का हर ज़ाविया किसी एक नुक्ते पर मरकुज हो जाए। यानी किसी चिज़ की हकीकत मालूम कर ने के लिए वह शोउरी और गैर शोउरी तौर पर उस चिज़ से अपना एक रब्त काईम कर ले। वह ज़िन्दगी का काम और ज़िन्दगी की कोई हरकत करे। ज़ेहनी तौर पर उस की तमाम तर तवज्ह उस चिज़ की मानवीयत तलाश करने में मसरुफ रहे। अंबिया अलैहिमीस्सलाम के अंदर यही तरज़े फिक्र काम करती थी। वह हर काम और हर अमल का रुख इरादतन और तबअन अल्लाह तआला की तरफ मोड़ देते थे यानी उन के ज़ेहन में यह बात रासिख होती है कि हमारा हर काम अल्लाह तआला के लिए है। अंबियाए किराम ने उसी तरज़ो फिक्र को अपना ने की पूरी नोए इन्सानी को तरग़ीब दी है। और अपनी सारी ज़िन्दगी उसी तरज़े अमल में गुज़ार दी है।

امت کے لئے بہترین عمل

उम्मत के लिए बेहतरीन अमल

तमाम आसमानी सहाइफ और कुरआने पाक से यत बात साबित है कि इन्सान की अपनी कोई हैसियत नहीं है। अल्लाह तआला फरमाता है कि तुम हमारी समाअत से सुनते हो। हमारी बसारत से देखते हो। हमारे फवाद से सोच ते हो। तुमहारी आना हमारी तरफ से है। और तुम हमारी तरफ ही लौट जाओ गे। अल्लाह तआला हर शए पर मोहीत है। अल्लाह ही इब्तदा है अल्लाह ही इन्तिहा है। अल्लाह ही बातिन है अल्लाह ही ज़ाहिर है। जहाँ तुम एक हो वहाँ दोसरा अल्लाह है। और जहाँ तुम दो हो वहाँ तेसरा अल्लाह है। अल्लाह ही पैदा करता है और अल्लाह ही पैदाइश के बाद परवरिश के वसाइल फराहम करता है। और अल्लाह ही है जो बे हिसाब रिज़्क अता फरमाता है।

हर नबी ने अल्लाह तआला के हुक्म से अपनी उम्मत के लिए एक प्रोग्राम तरतीब दीया है। उस प्रोग्राम में बुंयादी बात यह रही है कि बन्दे का अल्लाह से एक रिश्ता काईम हो जाए। अंबियाए किराम ने हमें बताया कि अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को इस लिए तखलीक किया है कि बन्दे अल्लाह तआला को पहचान लें। और उनका ज़ेहनी रब्त

अल्लाह तआला के साथ काईम व दाईम रहे। कुरबान जाऐ हमारे प्यारे नबी हज़रत मोहम्मद मुस्तफा صلى الله عليه وآله وسلم पर कि जिन्हों अल्लाह तआला के साथ रब्त काईम करने के लिए अकिमीस्सलात यानी काईम नमाज़ की सुरत में एक तरीका मुतअय्यिन फरमा दिया है। जैसा कि हम पिछले सफहात में अर्ज़ कर चुके हैं कि गौरो फिक्र करने के बाद यह बात पूरी तरह वाज़ह हो जाती है कि नमाज़ में ज़िन्दगी का हर अमल और हर हरकत मोजूद है। यह आमालो हरकात बज़ाहिर जिस्मानी हैं, लेकिन उन का मकसद अल्लाह तआला के साम्ने होज़ूरी और इरफाने हक़ का होसूल है।

(Time and Space) زمان ومکان

अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में इरशाद फरमाया कि ए आदम अलैहिस्सलाम तू और तेरी बीवी इस जन्नत में रहो और खाओ इस में से बे रोक टोक जहाँ से तुमहारा जी चाहे। मगर इस पेड़ के करीब ना जाना कि हद से बढ़ने वालों में से हो जाओ गे (सुरए बकरा, आयत३५)

जब तक सेय्येदिना आदम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की हुक्म अदोली नहीं की वह जन्नत की नामतों से मुसतफेज होते रहे। और जब ना फरमानी के मुरतकीब होए तो जन्नत की फजा ने उन को रद कर दिया और वह

असफलुस्साफेलीन में भेज दिए गए। जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में इरशाद फरमाया कि तहकीक कि हम ने इन्सान को अच्छी सुरत बनाया और फिर भेज दिया असफलुस्साफेलीन में (सुरतुत्तीन, आयत, ३)

इन्सान के अंदर दो दमाग़ काम करते हैं। एक दमाग़ जितनी दमाग़ है। यानी आदम अलैहिस्सलाम की वह हैसियत जब वह ना फरमानी के मुरतकिब नहीं होवे थे। और दोसरा वह असफलुस्साफेल का दमाग़ जो ना फरमानी के बाद वजूद में आया। अल्लाह तआला के दिए होवे इखतियारात के तहत जन्नत में सेय्येदिना आदम अलैहिस्सलाम के अंदर सिर्फ एक दमाग़ था जिस का शियूह फरमा बरदार हो कर ज़िन्दगी गुजार ना था। और जब आदम अलैहिस्सलाम ने अपना इखतियार इसतिमाल कर के ना फरमानी के मुरतकिब होवे तो इस दमाग़ के साथ दोसरा दमाग़ वजूद में आगया। जो ना फरमानी और हुक्म अदोली का दमाग़ करार पाआ। जब तक आदम व हौव्वा र.अ. जन्नत के दमाग़ की होदुद में ज़िन्दगी गुजार रहे थे। तो वह टाइम इसपेस (Time and Space) की कैद से आजाद थे। लेकिन जब उनहों ने अल्लाह तआला के हुक्म के खिलाफ अमल किया तो उन पर टाइम और इसपेस मुसल्लत हो गया। यानी आजाद ज़ेहन कैदो बंद की बलाओं

में गिरफतार हो गया। टाइम और इसपेस में कैद हो कर जिन्दगी गुजारने के लिए उस ने ओसूलो कावाइद मुरत्तब कर लिए। मसलन भुक व पियास के तकाजों को पूरा करने के लिए खेती बाड़ी का इहतमाम और मेहनतो मुशक्कत के साथ इनतिज़ार की ज़हमत को भी गले लगा ना पड़ा। जब कि जन्नत में उस के लिए इनतिज़ार नाम की कोइ चिज़ ना थी। सैय्यदिना आदम अलैहिस्सलाम जन्नत में अल्लाह तआला की ना फरमानी की मुरतकिब होवे तो अल्लाह तआला से वह रब्त काईम नहीं रहा जो ना फरमानी के इरतिकाब से पहले था। चुँ कि यह रब्त आरज़ी तौर पर दुट गया था। इस लिए जन्नत के दमाग़ ने उनहें रद कर दिया। अरबी की मिस्ल है कि كل شئی یرجع الی اصله हर चिज़ अपनी असल की तरफ लौटती है। लिहाज़ा हमें इस दमाग़ को हासिल कर ने के लिए टाइम और इस्पेस से आज़ाद होने का वही तरीका इख्तियार करना होगा जिस तरीके से हमने इस दमाग़ को खोया है। यानी हम अपने इख्तियारात के तहत इस दमाग़ को रद करदें जिस की होदूद में रह कर हम आज़ाद दमाग़ से दूर हैं। और जिस के होदूद के तय्युन से हमारा वह रब्त काईम नहीं रहा जो जन्नत में था। इस रब्त को तलाश करना और इस रब्त को काईम करना कुरआने पाक की ज़बान में अकिमुस्सलात यानी काईम नमाज़ है। अल्लाह तआला का

इरशाद है कि नमाज़ काईम करो। यानी अल्लाह तआला के साथ अपना रब्त और तअल्लुक काईम करो। ऐसा रब्त जो ज़िन्दगी के हर हाल व काल में काईम रहे। हम जब कोई चिज़ हासिल करते हैं तो उस के लिए हमें कुर्बानी देनी पड़ती है। वक्त की कुर्बानी, सलाहियत की कुर्बानी, दमाग़ और सेहत की कुर्बानी, कुर्बानी जितनी बढ़ती चली जाती है उसी मुनासेबत हम होसूले मकसद में काम्याब होते हैं।

شعور اور لاشعور کیا ہے؟

शोउर और ला शोउर क्या है?

इन्सान दो रूख से मुरक्कब है। एक शोउर दोसरा ला शोउर। शोउर उस दमाग़ का नाम है जो बेदारी में काम करता है। और ला शोउर उस दमाग़ का नाम है जो हालते नीन्द और ख्वाब में काम करता है। अल्लाह तआला के इरशाद के मुताबिक बेदारी के हवास और ख्वाब के हवास एक ही है। फर्क सिर्फ यह है कि बेदारी के हवास में आदमी के उपर टाइम और इस्पेस (Time and Space) रहता है।और ख्वाब की हालत में आदमी टाइम और इस्पेस से आज़ाद हो जाता है। टाइम और इस्पेस से आज़ादी हासिल करने के लिए हमारे सामने उस के इलावा और कोइ तरीका नहीं कि हम बेदारी के हवास को मग़लुब करें। और ख्वाब

के हवास को अपने लिए ज़िन्दगी करार दें। मोजूदा सुरते हाल यह है कि हमारे उपर बेदारी के हवास ग़ालिब हैं। और ख्वाब के हवास मग़लूब हैं। हम ग़ालीब व मग़लूब हवास में रद्दो बदल हो रेहे हैं। यानी कभी हम बेदारी के हवास में सर गरम अमल होते हैं, और कभी हम टाइम और इस्पेस से आज़ाद हो कर हालते ख्वाब में ज़िन्दगी गुजारते हैं। कुरआने पाक ने उन हवासों का तज़किरा रात व दिन के नाम से क्या है। इरशादे बारी तआला है।

तरजमाः हम दाखिल करते हैं रात को दिन में और दाखिल करते है दिन को रात में (सुरए यासीन, आयत, ३७)

दोसरी जगह इरशाद फरमाया कि

तरजमाः निकालते हैं दिन को रात में से और निकालते हैं रात को दिन में से। यानी हवास एक ही है। उन में सिर्फ दरजा बंदी होती रहती है। दिन के हवास में ज़मान व मकान की पाबंदी ज़रुरी है। लेकिन रात के हवास में ज़मान व मकान लाज़िम नहीं होता। रात के यही हवास हैं। जो ग़ैब में सफर करने का ज़रिया बनते हैं और उन ही हवास से इन्सान बरज़ख, आराफ, मलाइका, मलाए-आला का इरफान हासिल करता है। हज़रते मुसा अलैहिस्सलाम से तीस रातों का वादा किया और पूरा किया उनको दस से तब तब पूरी होइ मुद्दत तेरे रब की चालीस रात की। (सुरऐ बकरा,५१)

अल्लाह तआला फरमा ता है कि चालिस रात में तौरेत हम ने मुसा अलैहिस्सलाम को अता फरमाया। फरमाने खुदा वंदी बहुत ही ज़ियादा ग़ोर तलब है। अल्लाह तआला ने यह नहीं फरममाया कि हम ने चालिस दिन में वादा पूरा किया। सिर्फ रात का तज़कीरा फरमाया है। ज़ाहिर है हज़रते मुसा अलैहिस्सलाम ने जब चालिस दिन और चालिस रात कुहे तुर पर कयाम फरमाया, तो उस का मतलब यह हुवा कि चालिस दिन और चालिस रात। हज़रते मुसा अलैहिस्सलाम के उपर रात का हवास ग़ालिब रहें। नबीए करीम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم की मेराज के बारे में अल्लाह तबारक व तआला का इरशादे पाक है वह ज़ात जो अपने बंदऐ खास (हज़रत मोहम्माद मुसत्फा صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) को रातों रात ले गया मस्जिदे हराम से मस्जिदे अकसा तक जिस के इरद गिरद हम ने बरकत रखी कि हम उसे अपनी अज़ीम निशानीयाँ दिखाऐं (सुरऐ इसराइल, आयत, १) रात के हवास यानी सोने की हालत में हम न खाते हैं न बात करते हैं और ना ही इरादतन ज़ेहन को दुन्यावी माम्लात में इसतिमाल करते हैं। अकिमुस्सलात यानी काईम नमाज़ के प्रोग्राम में यही अमल इख्तियार करने का हुक्म देता है। नमाज़ की हालत में हमारे उपर तकरीबन वह तमाम हवास वारिद हो जाते हैं जिन का नाम रात है।

معراج المومنین

मेराजुलमुमेनिन

अल्लाह तआला नबीए करीम सरकारे दो जहाँ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم की मेराज के ताअल्लुक से कुरआने मजीद में इरशाद फरमाता है कि पाक वह ज़ात जो अपने बंदऐ खास (हज़रत मोहम्मद मुस्तफा صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) को रातों रात ले गया मस्जिदे हराम से मस्जिदे अकसा तक जिस के इरद गिरद हमने बरकत रखी कि हम उसे अपनी अज़ीम निशानीयाँ दिखाऐं

(सुरऐ बनी इसराईल, आयत, १)

हम जब मेराज के मानी और मफहुम की तरफ मुतवज्जह होते है तो हमारे सामने यह बात आती है कि मेराज के मानी ग़ैब की दुन्या में दाखिल होना है। सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ज़मानो मकान (Time & Spece) को नज़र अंदाज़ फरमाते हुऐ जिसमानी और रूहानी तौर पर मक्का मोअज़्ज़मा से मस्जिदे अकसा तशरीफ ले गए। वहाँ मोजूद अंबियाए किराम सैय्यदुल मुरसलीन व इमामुल अंबिया होज़ूर अकरम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم की इमामत में नमाज़ अदा कीं फिर सरकारे दो जहाँ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने आसमानों की बलंदी का सफर शुरु किया। आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم पहले आसमान फिर दोसरे आसमान फिर तेसरे आसमान फिर चौथे आसमान फिर

पाँचवीं आसमान फिर छटटे आसमान और फिर सातवीं आसमान और उन आसमानों में मुकीम हज़रात से मुलाकात की। और जन्नतो दोज़ख के हालात होज़ूर के सामने आऐ। फरिशतों से गुफ्तगु होई। फिर आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने अर्श आज़म पर क्याम फरमाया। जहाँ होज़ूर अकरम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم को मेराज में ऐसा मकाम अता होवा कि जहाँ अल्लाह तआला और सरकारे दो जहाँ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم के दरमियान दो कमानों का फासला रह गया या उस से भी कम जैसा कि अल्लाह तबारक व तआला ने कुरआने मजीद में इरशाद फरमाया

ذومرۃ فاستوی۔ وھو بالافق الاعلیٰ۔ ثم دنا فتدلی۔ فکان قاب
قوسین او ادنی۔ فاوحیٰ الی عبدہ ما اوحیٰ۔ ما کذب الفواد ما رایٰ۔

तरजमाः फिर इस जलवा ने कस्द फरमाया। और वह आसमाने बरीं के सब से बलंद कनारा पर था। फिर वह जलवा नज़दीक होआ। फिर खूब असर आया। तो उस जलवे और इस महबुब में दो कमा का फासला रहा या उस से भी कम। अब वही फरमाइ अपने बन्दे को जो वही फरमाइ। दिल ने झुट ना कहा जो देखा (सुरऐ नज्म, आयत.४ ता ११)

मेराज के इस लतीफ और पुर अनवार वाकिया से यह बात सनद के तौर पर पैश की जा सकती है कि मेराज के मानी और मफहूम ग़ैब की दुन्या से रोशनास होने के हैं। यह मेराज सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم की मेराज है। नबीए करीम

ﷺ मेराज की इस अज़ीम निमत से मुशर्रफ होऐ। और अपनी उम्मत को अस्सलातो मेराजुल मुमेनिन का बेहतरीन तोहफा अता फरमाया। यानी जब कोइ मोमीन नमाज़ में क्याम करता है तो उस के बातिन का दार दरवाज़ा खुल जाता है जिस में से वह ग़ैब की दुन्या में दाखिल हो कर वहाँ के हालात से वाकिफ हो जाता है। फरिशतों का मुशाहिदा करता है। नूर के हाले में बन्द हो कर टाइम और इस्पेस से आज़ाद होने के बाद उस की रुहानी परवाज़ आस मानों की रफअत को छु लेती है। फिर वह अर्शे मोअल्ला पर अल्लाह के सामने सर बसोजूद हो जाता है। जैसा कि तिबरानी की हदीस शरीफ में सरकारे दो जहाँ ﷺ का इरशादे गिरामी है कि बन्दा जब नमाज़ के लिए क्याम करता है तो तमाम हिजाबात उठा लिए जाते हैं। जो अल्लाह और बन्दे के दरमियान होते हैं। होज़ूर ﷺ फरमाते हैं कि तुम अल्लाह की इबादत (इस होज़ूरे कल्ब) से करो गोया तुम उसे देख रहे हो, अगर ऐसा नहीं तो (यकीन रखो) कि वह तुम्हें देख रहा है वह मोमिन जो नमाज़ में मेराज हासिल कर लेता है उस के उपर अल्लाह तआला की सिफात का नूर बारिश बन कर बरसता है। यह बात ज़ेहन नशीं रखना ज़रुरी है कि सरकारे दो जहाँ ﷺ के किसी उम्मती की मेराज रुहानी तौर पर अल्लाह तआला की सिफात तक होती है। यानी कोइ

उम्मती नमाज़ के ज़रिए फरिशतों से हमकलाम हो सकता है जन्नत की सैर कर सकता है। और इतिहा यह है कि तरक्की कर के अल्लाह तआला का आरिफ बन सकता है। ऐसे मोमिन को यह शर्फ हासिल हो जाता है कि वह अर्श व कुरसी को देख लेता है। और उसकी आँखें अल्लाह तआला का दीदार कर लेती हैं। कान अल्लाह तआला की आवाज़ सुन्ते हैं। और दिल अल्लाह तआला की कुरबत से आशना हो जाता है। नबीए करीम ﷺ की मेराज जिसमानी और रुहानी है। और यह एक ऐसा आला मकाम है जो सिर्फ होज़ूरे अकरम ﷺ के लिए मखसूस है। हज़रते इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बेतुल-मामुर तक रिसाइ हासिल होई। बेतुल-मामुर से आगे हिजाबे अज़मत हिजाबे किबरीयाइ और हिजाबे महमुद के मकामात हैं। हिजाबे महमुद के बाद मकामे महमुद है। और यह वही मकामे आला है जहाँ नबीए करीम ﷺ मेराज में अल्लाह तआला से हमकलाम होए। आगे के सफहात को पढ़ने के बाद अस्सलातो-मेराजुल मुमेनीन की पूरी हकीकत समझ में आजाए गी।

نماز میں حضور قلب

नमाज़ में होज़ूरे कल्ब

नमाज़ की हकीकत से आशना होने के लिए अपनी रुह का इरफान हासिल करना ज़रुरी है। नबीए करीम ﷺ का इरशादे गिरामी है कि होज़ूरे कल्ब के बग़ैर नमाज़ नहीं हाती। यानी जब तक नमाज़ में होज़ूरे कल्ब ना हो और तमाम वस्वसों और मुनतशिर ख्याली से आज़ाद ना हो। फिर हकीकत उस की नमाज़ नमाज़ नहीं। यह ऐसा अमल है जिस को जिस्मानी हरकत तो कहा जा सकता है। लेकिन इस अलम में रुहानी कदरें शामिल नहीं होतीं। जब कोइ बन्दा रुह की गहराइयों के साथ नमाज़ काईम करता है तो उस के उपर से दमाग़ की गिरफ्त टुट जाती है। जिस दमाग़ को हम ने नाफरमानी का दमाग़ कहा है। जब किसी बन्दे के उपर जन्नत के दमाग़ का ग़लबा हो जाता है। और जन्नत का दमाग़ टाइम और इस्पेस की हद बन्दीयों से आज़ाद हो जाता है। जब टाइम और इस्पेस से आज़ाद दमाग़ के साथ हम अल्लाह की तरफ रोजू करते हैं। तो हमारे उपर अंवार का नोज़ूल होने लगता है। और हालते नमाज़ में मफरुज़ा हवास से हमारा रिशता मुंकता हो जाता है। इस बे खबरी का नाम इज़तराब और इसतग़राक है। यानी बन्दा अल्लाह तआली की तजल्लीयात और अंवार में जज़्ब हो कर खो

जाता है।

محبوبین کی نماز

हमबुबीन की नमाज़

सरकारे दो जहाँ ﷺ की नमाज़ः

होज़ूरे अकरम ﷺ की अकिमुस्सलात (काईम नमाज़) का यह आलम था कि जब आप नमाज़ के लिए क्याम फरमाते तो आप के पाए मुबारक में वरम (सुजन) आ जाता। हज़रते आइशा सिद्दीका र.अ. जब आप को रोकती तो आप फरमाते क्या मैं अल्लाह तआला का शुक्र गुज़ार ना बन जाउँ।

हज़रते अबु बकर र.अ. की नमाज़ः

जब हज़रते अबु बकर सिद्दीक र.अ. नमाज़ के लिए क्याम फरमाते तो आप की हालत एक सुखी लकड़ी की मानिन्द हो जाती। और उन पर शिद्दत से रिक्कत तारी हो जाती थी। और सोज़ व गदाज़ से मामूर फिजा में ग़ैर मुस्लीमों की औरतें और बच्चे भी रोने लगते थे।

हज़रते उमर फारुक र.अ. की नमाज़ः

हज़रते उमर फारुक र.अ. जब नमाज़ काईम करने के

तक पहुँचती थी। फारुक आज़म र.अ. फजर की नमाज़ के लिए इमामत फरमा रहे थे। सहाबाए किराम सफ बसफ थे। एका यक एक अज़ली शकी और बदबख्त खंजर हाथ में लिए हुवे आगे बढ़ता है। और खलीफए सानी के शिकमे मुबारक को चाक कर देता है। हज़रते उमर फारुक र.अ. ग़श खा कर गिर पड़ते हैं। खून का फौव्वारा उबल पड़ता है। इस हौलनाक मंज़र में भी सफें अपनी जगह काईम रहती हैं। हज़रते अब्दुर्रहमान बिन औफ र.अ. आगे बढ़ते हैं और इमामत के फराज़ पूरा करते हैं। दोगाना पूरी होने के बाद खलीफए वक्त को उठाया जाता है।

हज़रते उसमाने ग़नी र.अ. की नमाज़ः

हज़रते उसमान ग़नी र.अ. जब नमाज़ के लिए क्याम फरमाते तो दुन्या की हर चिज़ से बेनीयाज़ हो कर अल्लाह की तरफ मुतवज्जे होते। हज़रते अनस बिन मालिक र.अ. से रवायत ही कि बाग़ीयों ने हज़रते उसमान र.अ. को शहीद कर दिया तो हज़रते उसमान र.अ. की बीवी ने कहा तुम ने एक ऐसे आदमी का कत्ल किया है जो सारी रात एक रकअत में कुरआन खत्म करता था।

हज़रते अली करमुल्लाह वजहुलकरीम की नामाज़ः

हज़रते अली करमुल्लाह वजहुलकरीम जब नमाज़ काईम करने का इरादा फरमाते तो आप के बदन पर लरज़ा तारी हो जाता था। और चेहरे का रंग बदल जाता था, आप फरमाया करते थे कि इस अमानत को उठाने का वक्त आन पहुँचा है जिसे आसमानों और ज़मीन के सामने पैश किया गया। लेकिन वह उठा ने की हीम्मत न कर सके। हज़रत अली करमुल्लाह वजहुलकरीम की रान में एक तीर लगा और आर पार हो गया तीर निकालने की कोशिश की गई तो आप को बहुत तकलीफ महसुस होइ। किसी सहाबी ने मशवरा दिया कि तीर उसी वक्त निकाला जाए जब आप नमाज़ में हुँ। चुनांच आप ने नमाज़ की नीयत बांधी और इस हद तक एकसू हो गए कि गिर्द व पैश की कोई खबर न रही। तीर को आसानी के सात निकाल कर मरहम पटटी कर दी गई। और आप को तकलीफ का कुच्छ इहसास तक न होवा।

हज़रते हसन र.अ. की नमाज़ः

हज़रते हसन र.अ.ने फरमाया कि नमाज़ के लिए तीन खोसूसी इज़्ज़ते हैं। पहली यह कि जब वह नमाज़ के लिए खड़ा होता है तो उस के सर से आसमान तक रहमते इलाही घटा बन कर छाजा ती है। और उस के उपर अंवार

बारिश की तरह बरसते हैं। दुसरी यह कि फरिशते उस के चारों तरफ जमा हो जाते हैं। और उस को अपने घेरे में ले लेते हैं। तेसरी बात यह कि एक फरिशता पुकारता है कि ए नमाज़ी यूँ अगर तुम देख लो कि तुमहारे सामने कौन है और किस से बात कर रहे हो तो खुदा की कस्म क्यामत तक सलाम न फेरो।

हज़रते ज़ेनुल-आबेदीन र.अ. की नमाज़ः

हज़रते ज़ेनुल-आबेदीन र.अ. एक रोज़ मस्जिद में नमाज़ अदा कर रहे थे कि एका एक छप्पर में आग लग गई और आनन फानन भड़क उठी। लेकिन आप बदसतूर नमाज़ में मसरुफ रहे। यह वाकिया देख कर लोग जमा हो गए। बहुत शौर मचाया। लेकिन आप को खबर तक न होई जब आप नमाज़ से फारिग़ होए और बाहर तशरीफ लाए तो लोगों ने अर्ज़ किया कि हज़रत हम ने इतनी ज़ोर ज़ोर से आवाज़ें दीं, लेकिन आप ने परवाह तक न की। आप ने फरमाया कि यह दुन्या की आग से बचाने की कौशिश कर रहे थे मगर मैं इस वक्त खुदा के दरबार में खड़ा था।

हज़तरे अनस र.अ. की नमाज़ः

नमाज़ में आप के उपर इस कदर महवियत तारी हो जाती

कि क्याम व सज्दा का वकफा तवील से तवील तर हो जाता था। लोग समझते थे कि भुल गए हैं।

हज़रते अब्दुल्लाह इबने ज़ुबेर र.अ. की नमाज़ः

हज़रते अब्दुल्लाह इबने ज़ुबेर र.अ. नमाज़ काईम करते थे तो कई कई सुरतों की तिलावतें कर जाते थे। और इस तरह क्याम करते थे कि लगता था कि सोतून खड़ा है। जब सजदा में जाते तो इतनी देर तक सजदा में रहते कि हरम शरीफ के कबुतर उन की पीठ पर आकर बैठ जाते थे।

हज़रते अवैसे करनी र.अ. की नमाज़ः

हज़रते अवैसे करनी र.अ. सारी रात नहीं सोते थे। और फरमाया करते थे कि ताअज्जुब है कि फरिशते तो इबादत करते थकते नहीं और हम अशरफूल मखलूकात हो कर थक जाऐं और आराम की नीन्द सो जाऐं।

हज़रते राबिया बसरी र.अ. की नमाज़ः

हज़रते राबिया बसरी र.अ. दिन रात का असर हिस्सा नमाज़ में गुज़ारतीं थीं और फरमाती थीं। कि बा खुदा इतनी नमाज़ कि क्याम से मेरी गर्ज़ सवाब हासिल कर ना नहीं है बलकि यह चंद रकअतें इस लिए अदा कर लेती हूँ

ताकि क्यामत के दिन दोसरे अंबियाए किराम के सामने ﷺ यह फरमा कर सुर्खरु हों कि यह नमाज़ मेरी उम्मत में से एक औरत की है।

हज़रते सुफयाने सौरी र.अ. की नमाज़ः

हज़रते सुफयाने सौरी र.अ. एक दिन खानए काबा के करीब अकिमुस्सलात थे। जब आप सजदे में गए तो किसी दुशमन ने पाओं की उंगली काट दी, सलाम फेरा तो खून पड़ा होवा देखा और फिर पाओं में तकलीफ महसुस की, तब मालूम होवा कि किसी शख्स ने उंगलीयाँ काट डाली हैं।

हज़रते मुस्लिम बिन बश्शार र.अ. की नमाज़ः

हज़रते मुस्लिम बिन बश्शार र.अ. की शख्सीयत बहुत बारोब थी। आप के रोब का यह आलम था कि आप जब बाहर से घर में तशरीफ लाते तो घर वाले आप के रोब से खामुश हो जाते थे। लेकिन नमाज़ में वह इस तरह महव व मुसतगरक हो जाते थे कि बच्चों के शौर का आप को कतअन इल्म नहीं होता था। एक दफा आप नमाज़ की नीयत बांधे होवे थे इत्तिफाक से उस कमरे के किसी कोने में आग लग गई लेकिन आप नमाज़ में मशगूल रहे। सलाम फैर ने के बाद घर वालों ने कहा कि तमाम मोहल्ले वाले आग

बुझाने के लिए जमा हो गए। और आप ने नमाज़ न छोड़ी। हालां कि ऐसे वक्त में फर्ज नमाज़ की नीयत तोड़ना भी जाइज़ है। तो आप ने फरमाया कि अगर मुझे खबर होती तो ज़रुर नीयत तौड़ देता।

ہر مرض کی دوا ہے

हर मरज़ की दवा है

नमाज़ दर अस्ल ऐसा निज़ाम है जो इन्सान को अपनी रुह से करीब कर देता है। और जब कोइ बन्दा अपनी रुह को जान लेता है तो उस के सामने यह बात आ जाती है कि खुद अल्लाह उस की रहनुमाइ करता है। अब आप इस बात से अंदाज़ा लगाऐं कि आप की हसती उस वक्त क्या होती है। और आप अल्लाह के कितने करीब होते हैं। वाकिया यह कि इस तरज़े अमल में हमारी हर तहरीक अल्लाह की तहरीक पर मबनी हो ती है। इस तरज़ अलम की नफसयाती गहराई पर गौर करें कि इन्सान खालिसतन लिल्लाह जब कोइ काम करता है तो उसे कितनी बड़ी खुशी हासिल होती है। वह खुशी उस के अंदर समा जाती है। जो उसकी रुह के कोने कोने को मनौव्वर कर देती है। इस खुशी से उस की रुह इतनी हलकी हो जाती है कि वह अपने जिस्म को भुल जाता है। अगर हम अपने बुज़ुरगों के हालाते ज़िन्दगी पर नज़र

डालें तो यह बात सामने आती है कि गोया वह इसी किस्म की ज़िन्दगी गुज़ारते थे। जिस तरह एक आम आदमी ज़िन्दगी गुज़ार ता है। लेकिन फर्क सिर्फ इतना है कि वह तरज़े अमल की लज़्ज़त से आशना थे। जब कि हन उस से आशना नहीं हैं। क्या सरकारे दो आलम ﷺ के हर उम्मती के लिए मुमकीन नहीं जैसा कि हमारे बुज़ुरगों के लिए मुमकीन हुवा। यकीन्न हम सब के लिए मुमकीन है। लेकिन हम गफलत में हैं। हमारे बुज़ुरगों ने इस लज़्ज़त से आशना हो कर नमाज़ और नमाज़ की बरकत से एक जमाअत की शक्ल इवतियार की और चंद लोगों की जमाअत ने दुन्या को उलट पलट कर नक्शा बदल दिया। मगर जब मुसमानों ने नमाज़ को नमाज़ की तरह अदा करना छोड़ दिया और मुकद्दस किमाऐ असर इबादत को एक रसम बना दिया। तो कुदरत ने इस ग़लती की वज्ह से हम से हर किस्म की सरदारी और हाकिमीयत छीन ली। हमारी रुह में हरारत बाकी न रही । सोज़ व गदाज़, इज्ज़ व इनकिसारी, हिल्म व इल्म, फहम व अक्ल और फिकरे सलीम से हम तही दामन हो गऐ। नमाज़ मे इरतका तवज्ह रुह का इर्फान दिल का गदाज़ और अल्लाह से दोस्ती ना हो तो ऐसी नमाज़ उस जिस्म की तरह है जिस में रुह ना हो। अगर हम अपनी नमाज़ अल्लाह और उसके बताऐ होऐ तरीकों पर अदा करते हैं। तो फिर हमारी

नमाज़े नमाज़े क्यों नहीं? हम इन बरकात व इनआमात से क्यों बे बहराह हैं? जिनसे हमारे असलाफ माला माल थे। अल्लाह और उस के बरहक रसुल मकबुल ﷺ के इरशाद के मुताबिक नमाज़ हर मर्ज़ का इलाज है।और हमारे अंदर हर ज़ख्म भरने के लिए मरहम और हर दर्द का मदावा है। लेकिन हमने अपनी मसलिहतों के पैश नज़र इस अमल को बे रुह बनाने में कोइ कसर नहीं उठ रखी। तमात नबयों ने खुदा परस्ती और नेक अमल की दावत दी है। वह उन मुकद्दस और पाकबाज़ हसतियों में हैं जिन के उपर खुदा का इनआम होवा। और जो सादात और कामयाबीयों के लिए चुन लिए गऐ। लेकिन सादात ना आशना सकावत पसंद लोगों ने अल्लाह के फरमा बरदार सालेह और रास्त बाज़ कुदसी नफ्स हज़रात की तालीमात कए फरामूश कर दिया। और शैतान के पेरो कार बन गऐ।

तरजमाः तो उन के बाद उन की जगह वह ना खल्फ आऐ जिन्हों ने नमाज़े गवाँईं और अपनी ख्वाहिशों के पीछे होए, तो अंकरीब वह दोज़ख मे गी का जंगल पाऐंगे। (सुरऐ मरयम, आयत,५९) आयते मुबारका का मफहुम यह है कि नमाज़ इबादत का जोहर है। अगर हम उसकी हकीकत से बा खबर ना होऐ तो सब कुच्छ ज़ाऐ हो गया। इल्मे इखला कियात पर गौर किया जाए तो तरक्की का सब से बड़ा और

सब से मोअस्सिर ज़रिया इन्सान का अपना ज़ाती वस्फ है। और वस्फ की कामील तसवीर नमाज़ की हरकातो सकनात से बनी है। नबीए करीम ﷺ के इरशाद के मुताबिक किर दार की बेहतरीन मोहर्रिक नमाज़ है। अल्लाह तबारक व तआला का फरमान है।

तरमजा: ए इमान वालो सब्र और नमाज़ से मदद चाहो। बे शक अल्लाह साबिरों के साथ है। (सुरऐ बकर, आ,१५२)

यही दो कुवतें जिन के ज़रिए हम अपनी तमाम मुशकिलात आज़माइशों, तकलिफों, ज़िल्लत और रुसवाई से निजात पा सकते हैं। अगर मुस्लमान में यह दो कुवतें जमा हो जाऐं तो दुन्यावी बादशाहत का सहरा उन के सर पर सजे गा। दीन व दुन्या में कभी ना काम न होंगे। नमाज़ रुहानियत का सरचश्मा है। नमाज़ ऐसा किला है जो बुराईयों के लशकर से हमारी हिफाज़त करता है। नमाज़ इन्सान को तमाम बुराईयों से रोकती है। सिर्फ हरकात को पूरा कर लेने का नाम नमाज़ नहीं है। नमाज़ की गर्ज़ व ग़ायत का इल्म होना भी ज़रुरी है। कुरआन मजीद रसमी नमाज़ काईम करने का हुक्म नहीं देता। तमाम अरकान की तकमील का हुक्म देता है। साफ साफ और वाज़ह तौर पर कहता है कि ज़ेहनी कलयों और होज़ूरे कल्ब के बगैर नमाज़ नहीं।

तरजमा: ए महबुब पढ़ो जो किताब तुमहारी तरफ वही की गइ और नमाज़ काईम फरमों बे शक नमाज़ मना करती है बे हयाइ और बुरी बात से। (सुरऐ अंकबुत, ४४)

نماز میں خیالات کی یلغار

नमाज़ में खयालात की यलगार

आम तौर पर लोग इस बात की शिकायत करते हैं कि नमाज़ एकसोइ नहीं होती जैसे ही नमाज़ की नीयत बांध ते हैं खयालात की यलगार शुरु हो जाती है। बाज़ वक्त तो यह भी याद नहीं रहता कि हम ने नमाज़ में कौन कौन सी सुरतें पढ़ी हैं। सलाम फेरने के बाद कुच्छ ऐसे ताअस्सुर काईम हो जाते हैं कि एक बोझ था जो उतार कर फैंक दिया गया ना कोइ केफियत हो ती है और न कोइ सोरुर हासिल हो ता है। जब कि नमाज़ इतमिनाने कल्ब और ग़ैब की दुन्या से मुतारिफ होने का एक बड़ा ज़रिया है उस की बड़ी वज्ह यह है कि हम नमाज़ की अदाइगी में इतनी जल्दी करते हैं कि नमाज़ का मकसद ही फौत हो जाता है। जितनी देर में पूरी नमाज़ खतम करली जाती है। रुकू व सोजूद में इतनी जल्दी का मुज़ाहिरा किया जाता है कि इतनी देर में एक बार सुबहाना रब्बीयल अज़ीम और सुबहाना रब्बीयल आला

नहीं कहा जासकता। रुकु में ज़रा झुकें घटनों पर हाथ रखे सर उठाया कमर सीधी भी नहीं होई कि सज्दे में चले गए सज्दे से उठे अभी सही तरह बैठे भी ना थे कि दोसरा सज्दा किया और उठ खड़े होए। याद रखऐ इस तरह नमाज़ अदा करना नमाज़ की बे हुरमती है। और अल्लाह तआला के होज़ूर गोया गुसताखी है ऐसी नमाज़ हर गिज़ नमाज़ नहीं है बलकि एक नाकिस अमल है जो क्यामत के रोज़ हमारे लिए वज्ह शरमिन्दगी व पैशमानी बन जाए गी। और हमें उस से कोइ फाईदा हासिल नहीं होगा।

तरजमाः और खराबी है उन नमाज़ीयों के लिए जो अपनी नमाज़ों से भुले बैठे हैं और जो दिखावा की नमाज़ पढ़ते हैं (सुरए माउन)

नबीए करीम ﷺ का इरशाद है कि बदतरीन चोरी करने वाला वह शख्स है जो नमाज़ में चोरी करे सहाबाए किराम ने अर्ज़ किया या रसुलल्लाह ﷺ नमाज़ में किस तरह चोरी करेगा आप ﷺ ने फरमाया नमाज़ में अच्छी तरह रुकु व सज्दा ना करना नमाज़ में चोरी है।

آذان کی اہمیت

आज़ान की अहमीयत

हमारा आम मुशाहिदा है कि हम जब किसी से हम कलाम होना चाहते हैं तो उसे अपनी तरफ मुतवज्जह करते हैं। मुतवज्जह करने के बहुत से तरीके हो सकते हैं कोइ चीज़ बजारक मुतवज्जह किया जाए, आवाज़ दे कर मुतवज्जह किया जाए, किसी के ज़रीए पैगाम भेज कर मुतवज्जह किया जाए। ज़ेहनी या रुहानी तौर पर तवज्जह के साथ मुतवज्जह किया जाए। हर मज़हब में अपने पैरोकारों को मुतवज्जह करने के किए कोइ ना कोइ तरीका राइज है। कहीं घंटा और घड़याल बजा कर लोगों को परसतिश और इबादत के लिए जमा किया जा ता है। तो कहीं शिंघ बजा कर पुजारीयों को पुजा पाट की दावत दी जाती है। और लोगों को एक मरकज पर जमा किया जाता है। नौए इन्सानी में जो चीज़ राइज हो जाती है वह बर करार रहती है। सिर्फ तरज़ों में तबदीली वाके होती रहती है। इस्लाम में उम्मते मुस्लिमा को एक मरकज पर जमा करने और अल्लाह की परसतिश के लिए बुलाने का जो तरीका राइज है उस का नाम आज़ान है आज़ान अपनी जगह एक इबादत भी है। इस्लाम ने अल्लाह के नाम के मुनादी करने वालों को इज़्ज़त

से सरफराज़ किया है। एक आदमी साफ सुथरी लिबास के साथ एक उंचे मकाम पर खड़ा हो कार अदब व इहतराम के जज़्बे से सरशार बा आवाज़े बलंद सदा लगा ता है। अल्लाहो अकबर अल्लाहो अकबर फिर वह अल्लाह की बादशाही और हाकिमीयत की शहादत देता है। और साथ ही साथ रसुलुल्लाह ﷺ की रिसालत की गवाही देता है। फिर वह अपने दाऐं बाऐं एलान करता है। नमाज़ खेरो बरकत है। नमाज़ फलाहे दारेन है। यह एलान अल्लाह की बड़हाइ से शुरु होता है। और अल्लाह की अज़मत व रहमत पर खतम हो जाता है। मतलब यह है कि आज़ान से यह बात पुरी तरह वाज़ेह कर दी जाती है कि हर काम की इबतिदा और काम की इनतिहा अल्लाह है। आज़ान देने वाला बन्दा खुश-अल्हान होना चाहिए उसके दिल व दिमाग़ रौशन व पाकीज़ा होना चाहिए। इस लिए कि आवाज़ के साथ जज़्बात बी नशर होते हैं अगर मोअज़्ज़िन के जज़्बात लतीफ नहीं हैं और उसका दिमाग़ मोहल्ले से आने वाली खोराक और रोटीयों में मलउस है तो ऐसे आदमी का ज़ेहन सोज़ व गदाज़ से खाली होगा। और जब ज़ेहन में सोज़ व गदाज़ नहीं होगा तो आवाज़ के सौती असरात दुसरे लोगों को मुताअस्सिर नहीं करेंगे। नमाज़ीयों के उपर यह फर्ज़ आइद होता है कि मोअज़्ज़ि को उस के शायाने शान दरजा

दें। और उस की इज़्ज़त व तकरीम में कमी न आने दें।

طریقت کا وضو

तरीकत का वज़ू

तरीकत का वज़ू मुरशीदे कामील के दस्ते हक परस्त पर होता है जिस में तमाम आज़ा को गुनाहे कबीरा और गुनाहे सगीरा से बचने की हीदायत दी जाती है (१) मसलन दोनों हथेलीयों का वज़ू यह है कि ग़ैरों के आगे हाथ फैलाने से रोकना है और उसको बारगाहे इलाही में लागों की भलाइ के लिए उठाना है (२) ज़बान जिस्म का एक अहम अज़्व है जो चोट तीर व तलवार नही पहुँचा सकते वह ज़बान चोट पहुँचा सकती है इस लिए हज़रते अली करमुल्लाह वज्हो ने फरमाया कि नेज़े का ज़खम भर जाता है लेकिन ज़बान का नहीं। ज़बान को बद गोइ से रोकना और अल्लाह के ज़िक्र में सरशार करना (३) नाक का वज़ू यह है कि दुन्या की बदबु से खुद को रोक ना (४) चेहरे का वज़ू यह है कि चेहरे को हमेशा अल्लाह तआला ही की तरफ रखना। यानी ग़ैरुल्लाह की तरफ रूख ना करना। और हर शए में जमाले खुदा का मुशाहिदा करना है (५) दोनों हाथों का वज़ू यह है कि हर ग़लत काम के इसतिमाल से रोक ना (६) सर का मस्ह यानी

दमाग़ को ग़ैरुल्लाह के ख्याल में मुबतला होने से रोक ना। (७) पैरों का वज़ू यह है कि पैरों को ग़लत राह पर चलने से रोक ना। यह तरीकत का वज़ू भी है और तरीकत का रोज़ा भी।

وضو کی سائنسی توجیہ

वज़ू की साइन्सी तौजीह

साइन्सी तजरबात से यह बात साबित हो चुकी है कि नबातात, जमादात, हैवानात और इन्सानी ज़िन्दगी एक बरकी निज़ाम के तेहत रवाँ दवाँ हैं। इन्सानी जिस्म से हासिल होने वाली बिज्ली की ताकत एक टार्च जैसी रेडयो चलाने के लिए काफी है। तहकीक से साबित होवा है कि किसी दरख्त के पत्ते पर मख्खी बैठ कर उसके रेशों को हरकत देती है तो पत्ते में बर्की रु दौड़ने लगती है। समंदर में रहने वाली Electricfish (बर्की की मछली) अपनी बर्की कुव्वत से इन्सान चोंका सकती है यह मछली अपनी खुराक हासिल करने के लिए रेत में छुप जाती है और जब मछलीया पास आती हैं तो अपने अन्दर काम करने वाली बर्की रु से उनहें बेहोश कर देती है। यह भी साबित हो चुका है कि जिस्म में सुइ चोभोने और गरम व सर्द पानी में भीगोने से

एक हलकी बर्की रु पैदा होती है। मामुली आवाज़ रौशनी ज़ाइका और बू के एहसासात से भी इन्सानी जिस्म में बर्की रु पैदा होती है।

नमाज़ के लिए वज़ू करना ज़रुरी है उस की वज्ह यह कि जब कोइ बन्दा वज़ू की नीयत करता है तो रौशनीयों का बहाओ एक आम डिगरी से हट कर अपनी राह तबदील कर लेता है। वज़ू करने के साथ साथ हमारे आज़ा से बर्कीये निकलते रहते हैं और इस अमल आज़ाए जिस्मानी को एक नई ताकत और कुव्वत हासिल हो जाती है। बेशक बन्दा जब वज़ू करे और अच्छी तरह करे यानी खोशू व खोज़ू के साथ फिर नमाज़ के लिए खड़ा हो जाए तो अल्लाह उस की जानिब तवज्ह फरमाता है उस से सरगोशी फरमता है। और उसकी जानिब से तवज्ह नहीं फैरता। जब तक वह शख्स खुद अपनी तवज्ह फैरले या दाऐं बाऐं तवज्ह करले।

हाथ धोना:-

जब हम वज़ू के लिए हाथों को धोते हैं तो उंगलीयों के पोरों में से निकलने वाली शुआऐं एक ऐसा हल्का बना लेती हैं जिस के नतिजे में हमारे अंदर दोरा करने वाला बर्की निज़ाम तेज़ हो जाता है और बर्की रौ एक हद तक हाथों में सिमट आती है इस अमल से हाथ खुबसुरत हो जाते हैं। सहि

तरीके पर वज़ू करने से उंगलीयों में ऐसी लचक पैदा हो जाती है जिस से आदमी के अंदर तखलीकी सलाहियतों को कागज़ या केनूस पर मुंतकिल करने की खुफया सलाहियतें बेदार हो जाती हैं।

कुल्ली करना:-

हाथ धोने के बाद हम कुल्ली करते हैं कुल्ली करने से जहाँ मुंह की सफाइ होती है वहाँ दांतों की बीमारीयों से निजात मिलती है। जबड़े मज़बुत होता हो जाते हैं और दाँतों में चमक दमक पैदा हो जाती है। वज़ू करते वक्त नबीए करीम ﷺ ने मिसवाक की ताकीद फरमाइ है। होज़ूर ﷺ का इरशाद है कि मिसवाक मुंह को साफ और बिनाइ को तेज़ करती है। मिसवाक आदमी के अंदर फसाहत पैदा करती है।

नाक में पानी डालना:-

कुल्ली करने के बाद नाक में पानी डाला जाता है। नाक इन्सानी जिस्म में एक निहायत अहम और काबिले तवज्ह अज़्व है। नाक की ज़बरदस्त सलाहियत यह है कि आवाज़ में गहराई और सोहाना पन पैदा करती है। ज़रा उंगलियों से नाक के नथ्थों को दबा कर बात करने की कोशिश कीजए आप को फर्क मालूम हो जाए गा। नाक के

अंदर परदे आवाज़ की खुबसुरती में एक मखसूस किदार आदा करते हैं। कासए सर को रौशनी फराहम करते हैं। नाक के खास फराईज़ में सफाइ के काम को बड़ा दखल है। यह फेफड़ों के लिए हवा को साफ मरतुब गरम और मोज़ों बनाती है। हर आदमी के अंदर रोज़ाना तकरीबन पाँच सो मोअक्कब फिट हवा नाक के ज़रीए दाखिल होती है। हवा की इतनी बड़ी मिकदार से एक बड़ा कमरा भरा जा सकता है। बर्फ़ बारी के मोसम में मुंजमिद और खुश्क दिन आब बर्फ़ पोश मैदान (Skating) में इसकेटिंग शुरु करदें लेकिन आप के फेफड़े खुश्क हवा से कोइ दिल चश्पी नहीं रखते वह उस की एक रमक कोबूल करने को तैयार नहीं होते उस वक्त भी ऐसी हवा की ज़रुरत होती है जो गरम और मरतुब फिजा में मिलती है। यानी वह हवा जिस में से उसकी अस्सी (८०) फिसद रोतुबत हो। और जिसा दरजए हरारत नव्वे (९०) के फारन हाइट (Fahrenheit) से ज़ियादा हो फेफड़े जरासीम से पाक धोऐं या गर्दो गोबार और आलुदगियों से मुसफ्फा हवा तलब करते हैं। ऐसी हवा फराहम करने वाला मामुली इयर कण्डेशनर (Air conditioner) एक छोटे टरक के बराबर होता है। लेकिन नाक के अंदर निज़ामे कुदरत ने इस को इतना

मुखतसर (Integrated) कर दिया है कि वह सिर्फ पाँच इंच लम्बा है नाक हवा को मरतुब बनाने के लिए तकरीबन चोथाइ गिलन नमी रोज़ाना पैदा करती है। सफाइ और दोसरे सख्त काम नथ्थों के बाल अंजाम देते हैं। नाक के अंदर एक खूद्र बीनी झाड़ो है। उस झाड़ो के अंदर नज़र ना आने वाली (गैर मरई) रौऐं होते हैं जो हवा के ज़रिए मादे के अंदर पहुँचने वाले मुज़िर जरासिम को हलाक कर देते हैं। जरासिम को अपने मशीनी अंदाज़ में पकड़ने के इलावा उन गैर मरई रौओं के पास एक दिफाइ ज़रिआ है जिसे अंग्रेज़ी में (Lysozium) लाइ सोज़ीम कहते हैं उस दिफा के ज़रिए से नाक आंखों को इंफेकशन (Infection)से बचा ती है जब कोइ नमाज़ी वज़ू करते वक्त नाक के अंदर पानी डालता है तो पानी के अंदर काम करने वाली बरकी रौ उन गैर मरई रौओं की कार करदगी को ताकत पहुँचा ती है। जिस के नतीजे में बेशुमार बीमारियों से महफुज रहता है।

चेहरा धोना:-

चेहरा धोने में यह हिकमत पोशीदा है कि उस से अज़लात (Muscies)में लचक और चेहरे की जिल्द में नरमी और ताकत पैदा हो जाती है। गर्दो गोबार से बंद मोसामात खुल जाते हैं। चेहरा बा रवन्नक और पुर कशिश

और बारोब हो जाता है। दौराने खुन (Blood Pressure)कम या ज़ियादा हो तो उस के अंदर एतदाल पैदा हो जाता है। मुंह धोते वक्त जब पानी आंखों में जाता है तो उस से आंखों के अज़लात (Muscies) को ताकत पहुंचती है। आंखों में सफेदी और पुतली में चमक ग़ालिब आ जाती है। वज़ू करने वाले बन्दे की आंखें पुर कशिश खुबसुरत और पुर खुमार हो जाती हैं। चेहरे पर तीन बार हाथ फेरने से दिमाग पुर सोकुन हो जाता है।

कहनियों तक हाथ धोना:-

कहनियों तक हाथ धोने में यह मसलिहत पोशीदा है कि इस अमल से आदमी का ताअल्लुक बराहे रास्त सीने के अंदर ज़खीरा करने वाली रौशनीयों से काईम हो जाता है। और रौशनीयों का होजूम एक बहाओ की शक्ल इखतीयार कर लेता है। इस अमल से हाथो के अज़लात (Muscies) मज़बूत और ताकत वर हो जाते है।

सर का मस्ह करना:-

कासए सर के उपर आदमी के अंदर अंटिना का काम करते हैं। यह बात हर बाशोउर शख्स जानता है कि आदमी इतलाआत (Information)के ज़खीरे का नाम है। जब

तक उसे किसी अमल के बारे में इत्तला न मिले वह कोइ कान नहीं करता। मसलन खाना हम उस वक्त खाते हैं जब हमें भुक की इत्तला मिलती है। पानी उस वक्त पीते हैं जब हमारे अंदर पियास का तकाज़ा पैदा हो ता है। सोने के लिए बिसतर पर उस वक्त लेटते हैं जब हमें यह इत्तला मिलती है कि अब हमारे आसाब को आराम की ज़रुरत है। खुशी के जज़्बात वह एहसा-सात हमारे उपर उस बक्त मज़हर बंते हैं जब हमें खुशी से मुताअल्लिक कोइ इत्तला फराहम हो ती है इस तरह ग़ैज़ो ग़ज़ब की हालत की हालत का इन्हसार भी इत्तला पर है। वज़ू करने की नीयत दर अस्ल हमें इस बात की तरफ मुतवज्ह कर देती है कि हम यह कलाम अल्लाह के लिए कर रहे हैं। वज़ू के अरकान पुरे करने के बाद जब हम सर का मस्ह तक पहुँचते हैं तो हमारा ज़ेहन ग़ैरुल्लाह से हट कर अल्लाह की ज़ात की तरफ मरकुज़ हो चुका हो ता है। मस्ह करते वक्त जब हम सर पर हाथ फैरते हैं तो सर के बाल इन इत्तलाआत को कोबुल करते है जो हर किस्म की सकाफात और महरुमी और अल्लाह से दुरी के मुताज़ाद हैं यानी बन्दे का ज़ेहन इस इत्तला को कोबुल करता है। जो मस्दरे इत्तलाआत अल्लाह तआला से बराहे रास्त हम रिश्ता है।

गरदन का मस्ह :-

माहेरीने रुहानीयत ने इन्सानी जिस्म को छ हिस्सों में तकसीम किया है। एक हिस्सा "हबलुल वरीद" है, अल्लाह तआला का इरशाद है कि में रगे जान से करीब हुँ। यह रगे जाँ "हबलुल वरीद" सर और गर्दन के दरमियान वाके है। गर्दन का मस्ह करने से इन्सानी जिस को एक खास तवानाइ हासिल हो जाती है जिस का तअल्लुक रीढ के अंदर हराम मग़ज़ (Medulla ablongat)और तमाम जिसमानी जोड़ों से है। जब कोइ नमाज़ी गर्दन का मस्ह करता है तो हाथों के ज़रिए बरकी रौ निकल कर जान में ज़खीरा हो जाती है। और रीढ की हडडी (Spinal Chord) को अपनी गुज़र गाह बनाते होए जिस्म के पुरे आसाबी निज़ाम में फैल जाती है। जिस के ज़रिए आसाबी निज़ाम (System Nervous)को तवानाइ मिलती है।

पैरों का मस्ह करना या धोना:-

जैसा कि हम बता चुके हैं कि दिमाग इत्तलाआत को कोबुल करता है। और यह इत्तलाआत लहरों के ज़रिए मुंतकील होती हैं। इत्तला की लहर एक वजूद रखती है। वजूद का मतलब मुतहर्रिक रहना है। कानून यह है कि

रौशनी हो या पानी उस के लिए बहाओ ज़रुरी है। और बहाओ के लिए ज़रुरी है कि उस का कोइ मज़हर बने और वह खर्च हो। जब कोइ बन्दा पैर धोता है तो ज़ाइद रौशनीयों का होजूम (Poison) पैरों के ज़रिए अख्र हो जाता है। और जिस्मे इन्सानी ज़हरीले माद्दों से महफुज रहता है।

ارکان نماز کی سائنسی وضاحت

अरकाने नमाज़ की साइन्सी वज़ाहत

वज़ू करने के बाद निहायत आराम दह नशिस्त से किब्ला रु बैठ जाऐं। तीन बार दरुद शरीफ पढ़ें। फिर तीन बार इसतगफार पढ़ कर आंखें बंद करलें। एक मिंट या तीन मिंट या पाँच मिंट जितना आप को वक्त मिल जाए। और यह तसौव्वर काईम करें कि अल्लाह की इबादत (इस होज़ूरे कल्ब) से करो गोया तुम उसे देख रहे हो। अगर ऐसा नहीं तो (यकीन रखो) कि वह तुमहें देख रहा है।

उस के बाद खड़े हो कर नीयत बांधलें। नमाज़ में खड़े होते वक्त इस बात का ख्याल रखा जाए कि दोनों पैर एक दोसरे के मुतवाज़ी हुँ। और उन के दरमियान अंदाज़न छ इंच का फासला रहे। नमाज़ के तमाम अरकान में रीढ की हडडी सीधी रखी जाए। जब कि सर थोड़ा सा झुका होवा हो

निगाह सज्दे की जगह मरकुज रहे। दोनों पै एक जगह जमे रहें। हिलाए झुलाए न जाऐं। दौराने क्याम सना के बाद सुरऐ फातिहा और कुरआने पाक की आयतें अलग अलग अलफाज़ अदा कर के पढ़ें। अलफाज़ खुब तवज्ह से सुनें। और यह देखें कि एक एक लफ्ज अलग अलग अदा हो रहा है। ज़ियादा बेहतर और मुनासिब है कि इन सुरतों का तरजमा याद करलें जो सुरतें आप को हिफ्ज हैं। अरबी पढ़ते वक्त उन के तरजमे पर भी धियान दें। जब आप की तवज्ह कुरआने पाक में मरकुज हो जाए गी तो आप इर्द गिर्द से बे खबर हो जाऐं गे। और नमाज़ में एकसुइ नसीब होगी। यही वह एकसुइ है जिसे अकिमुस्सलात यानी काईम नमाज़ या अल्लाह के साथ रब्त कहा गया है।

नीयत बांधना:-

दिमाग में खरबों खलऐ काम करते हैं। और खलयों में बरकी रौ दौड़ती रहती है। इस बरकी रौ के ज़रिए ख्यालात शोउर और तहत्तशोउर से गुज़रते रहते हैं। दिमाग में खरबों खलयों की तरह खरबों खाने भी होते हैं। दिमाग का एक खाना वह है जिस में बरकी रौ फोटो लेती रहती है और तकसीम करती रहती है। यह फोटो बहुत ही ज़ियादा बारीक होती है या बहुत ही ज़ियादा चमकदार। एक दोसरा

खाना है जिस में कुछ अहम बातें होती हैं। इन अहम बातों में वह बातें भी होती हैं जिन को शोउर ने नज़र अंदाज़ कर दिया है। और जिन को हम रुहानी सलाहियत का नाम दे सकते हैं। नमाज़ी जब हाथ उठा कर सर के दोनों तरफ कानों की जड़ में अंगुटे रख कर नीयत बांधता है तो एक मखसुस रबकी रौ निहायत बारीक रग को अपना कंडेशनर (Condensor) बना कर दिमाग में जाती है। और दिमाग के अंदर इस खाने को खलये को चार्ज कर देती है। जिस को शोउर ने नज़र अंदाज़ कर दिया था। यह खलये चार्ज होते ही दिमाग में रौशनी का एक धमाका करते हैं। और उस धमाके से तमाम आसाब मुताअस्सिर हो कर उस खाना की तरफ मुतवज्ह होते हैं। जिस में रुहानी सलाहियतें मखफी हैं। साथ ही साथ हाथ के अंदर एक तेज़ बरकी रौ दिमाग से मुन्तकिल हो जाती है। जब कानों से हाथ उठा कर नाफ के निचे हाथ बांधे जाते हैं तो हाथों के कन्डेशनर से नाफ में बिजली का ज़खीरा हो जाता है। ज़ेरे नाफ हाथ बांधने की सुरत में जिन्सी आज़ा जो निज़ामे बरकी का एक कवी अज़्व है को ताकत मिलती है ताकि नौए इन्सानी की नस्ल दौसरी नौओं से मुमताज़ और अशरफ रहे। अब सना पढ़ा जाता है। जैसे ही यह अलफाज़ अदा होते हैं रुह अपनी पुरी तवानाइयों के साथ सिफाते इलाही में जज़्ब हो जाती है।

और पुरे जिसमानी निज़ाम में अल्लाह तआला की सिफत रौशनी बन कर सरायत कर जाती है। जिस्म का रुवां रुवां अल्लाह की पाकी बयान करने में मशगुल हो जाता है। अल्लाह तआला का इरशाद है। अगर हम इस कुरआन को किसी पहाड़ पर उतारते तो तु देखता कि वह पहाड़ अल्लाह के खौफ से रेज़ा रेज़ा हो जाता (सुरऐ हशर, आयत,२१)

आयते मुकद्दसा का मफहुम यह है कि नमाज़ शुरु करते ही अंवारे इलाही का ज़खीरा करने की वह सलाहियत पैदा हो जाती है जिस के पहाड़ भी मुतहम्मील नहीं हो सके।

सना के बाद जब नमाड़जी कुरआन पढ़ता है तो वह शोउरी तौर पर अपनी नफी कर देता है। और कुरआन के अंवार उस के सामने आ जाता है। वह इस बात का इकरार करता है कि बेशक अल्लाह ने मुझे उस का अहल बनाया है कि मैं कुरआन के अंवार से मुसतफेज हो सकता हुँ।

सीने पर हाथ रखना:-

खवातीन नीयत के बाद जब सीने पार हाथ बांधती हैं तो दिल के अंदर सिहत बख्श हरारत मुन्तकिल हो हाती है। और वह गोदुदे नश व नुमा पाते हैं। जिन के उपर बच्चों की गिज़ा का इनहिसार है। नमाज़ काईम करने वाली माँओं के दुध में यह तासीर पैदा हो जाती है कि बच्चों के अंदर बराहे

रास्त अंवार का ज़खीरा होता रहता है। जिस से उन के अंदर ऐसा नसबुल अेन (Pattern) बन जाता है कि जो बच्चों की शोउर को नूरानी बना ता है। ऐसे बच्चों में रज़ा व तसलीम की केफीयत पैदा हो कर बच्चों में खुश रहने की आदत डालती है। नमाज़ी माँओं के बच्चों के अंदर गहराइ में तफक्कुर करने और लतीफ से पतीफ तर मानी पहचान ने और समझ बुझ की सलाहियते रौशन हो जाती है।

रुकु करना:-

जैसा कि हम बता चुके हैं कि दिमागी खलयोंऔर बरकी रौ से तमाम आसाब का तअल्लुक है। तमाम आसाब पर उस का असर पड़ता है। यह बरकी रौ कितनी किस्म की कीतनी तादाद पर मुशतमील है। उस का शुमार क्या है। आदमी किसी ज़रिये गिन नहीं सकता। अल्बत्ता यह बरकी रौ दिमागी खलयों से बाहर आती हैं। और फिर देखने, चिखने, सुंघने, सोचने, बोलने और छुने की हिस बनाती है। यह बरकी रौ उम्मुलदिमाग में से चल कर रीढ की हडडी के हराम मग्ज़ से गुज़र ती होइ कमर के जोड़ सीकरम (Sacrum) में दाखिल हो कर पुरे आसाब में दाखिल हो जाती है। और यही तकसीम हवास बन कर रह जाती है। नमाज़ी जब रुकु में झुकता है तो सेनसीस (Senses)

बनाने का फारमुला उलट जाता है। यानी हवास बराहे रास्त दिमाग के अंदरुनी रुख के ताबे हो जाता हैं। और दिमाग एकसुइ हो कर एक नुकते पर अपनी लहरें मुनअकिस करना शुरु कर देता है। रुकु के बाद जब नमाज़ी क्याम करता है तो दिमाग के अंदर की रौशनीयां दो बारा पुरे आसाब मे तकसीम हो जाती है। जिस से इन्सान सरापा नूर बन जाता है। अल्लाह तआला का इरशाद है,,

तरजमा: अल्लाह नूर है आसमानों और ज़मीनों का उस के नूर की मिसाल ऐसी है जैसे एक ताक कि उस में चिराग है। वह चिराग एक फानुस में है। वह फानुस गोया एक सितारा है मोती सा चमकता रौशन हो ता है। बरकत वाले पेड़ ज़ेतुन से जो न पुरब के न पछीम के करीब है कि उस का तेल भड़क उठे अगर चे उसे आग न छुए नूर पुर नूर है। अल्लाह अपने नूर की राह बता ता है। जिसे चाहता है। और अल्लाह मिसालें बयान फरमा ता है लोगों के लिए और अल्लाह हर चिज़ का इल्म रखता है। (सुरऐ नूर, आयत, ३५)

रुकु में इस कदर झुकें कि सर और रीढ की हडडी मुतवाज़ी रहें। निगाहें पैर के अंगुठों पर मरकुज रहें। हाथ दोनों घटनों पर इस तरह रखें कि टांगों में तनावो रहे।

सुबहाना रब्बीयल अज़ी तीन बार पांच बार या सात बार कह कर इस तरह खड़े हुँ जैसे कोइ फोजी अटेन्शन

(Attention) हो ता है। रुकु में नमाज़ी हाथ की उंगलीयों से जब घुटनों को पकड़ता है तो हथेलीयों और उंगलीयों के अंदर के काम करने वाली बिजली घुटनों में जज़्ब हो जाती है। जिस की वज्ह से घुटनों के अंदर सिहत मंद लोआब बर करार रहता है। और ऐसे लोग घुटनों और जाड़ों के दर्द से महफुज रहते हैं।

सज्दा और टेली पीथी:-

रौशनी एक लाख छियासी हज़ार दो सो बयासी (१८६२८२) मेल फी सिकेण्ड की रफतार से सफर करती है। और ज़मीन के गिर्द एक सिकेण्ड में आठ दफा घुम जाती है।जब नमाज़ी सज्दे की हालत में ज़मीन पर सर रखता है तो उस के दिमाग के अंदर की रौशनीयों का तअल्लुक ज़मीन से मिल जाता है और ज़ेहन की रफतार एक लाख छियासी हज़ार दो सो बयासी मेल फी सिकेण्ड हो जाती है। दोसरी सुरत यह है कि दिमाग के अंदर फोज़ूल खयालात पैदा करने वाली बिजली बराहे रास्त ज़मीन में जज़्ब हो जाती है। और बन्दा ला शोउरी तौर पर कशिशे सिक्ल (Gravity) से आज़ाद हो जाता है। उस का बराहे रास्त तअल्लुक खालीके काइनात से हो जाता है। रुहानी कुवतें इस हद तक बहाल हो जाती है कि आंखों के सामने से परदा हट कर ग़ैब की दुन्या सामने आजा

ती है। एक मरतबा सरको दो जहाँ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने नमाज़े कोसुफ पढ़ी तो सहाबए किराम ने अर्ज़ किया या रसुलुल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم हमने देखा कि आप ने अपनी जगह से हट कर कोइ चिज़ पकड़ा? तो होज़ूर अकरम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने फरमाया मैं ने जन्नत को देखा तो उस से एक खोशा तोड़ना चाहा अगर मैं ले लेता तो तुम उसे रहती दुन्या तक खाते (बुखारी शरीफ) जब नमाज़ी फीज़ा और हवा के अंदर से रौशनीयां लेता होवा सर, नाक, घुटनों, हाथों और पैरों बीस उंगलीयां किबला रु ज़मीन से मिला देता है। यानी सज्दा में चला जाता है तो जिस्म आला का खुन दिमाग में आ जाता है। और दिमाग को ताकत फराहम करता है। कीमयाइ तबदीलीयां पैदा हो कर इंतकाले ख्याल (Telepathy) की सलाहियतें उजागर हो जाती हैं। सज्दे में आंखें बंद करलें और यह तसौव्वर काईम करे कि में अल्लाह तआला के होज़ूर सज्दा रेज़ हुँ। इस तसौव्वर को काईम करते हुऐ سبحان ربی الاعلیٰ तीन बार या पाँच बार या सात बार पढ़ें। जब कोइ बन्दा अल्लाह के लिए अपनी पेशानी ज़मीन पर रख देता है तो काइनात उस के सामने सर ब सोजुद हो जाती है। और शम्स व कमर उस के लिए मुसख्खर हो जाते हैं।

जलसा व कोउदः-

जलसे में निगाहें सज्दे की जगह काईम रखें और इततिमनान से इतनी देर बैठें जितनी देर में سبحان ربی الاعلیٰ कम से कम तीन बार पढ़ा जा सकता है। दोनो सज्दे अदा कर के ठहर ठहर कर अत्तहियात, दरुदे इब्राहीमी और दुआऐ मासुरा पढ़ें और साथ ही साथ मानी पर भी ग़ौर करते जाऐं।

सलामः-

अस्सलामो अलै कुम। और तुम पर सलामती और रहमत हो अल्लाह की। यह अलफाज़ साबित करते हैं कि नमाज़ी के साथ दोसरी ग़ेबी मखलुक भी नमाज़ में शरीक है। जिस को सला किया जा रहा है। सलाम फैरते वक्त यह तसौव्वर होना चाहिए कि हमारे साथ इन्सानों, जिन्नातों और फरशितों ने भी नमाज़ अदा की।

دعا مانگنے کا طریقہ

दुआ मांगे का तरीका

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का इरशाद है कि मुझ से दुआ मांगो मैं तुमहारी दुआ कोबुल करुंगा। बेशाक जो लोग मेरी इबादत से रु गरदानी करते हैं। वह ज़रुर ज़लील व ख्वार हो कर जहंन्म में दाखिल होंगे। नबीए करीम صلی اللہ علیہ والہ وسلم का इरशाद है कि तुम में से जिस शख्स को दुआ मांगने की तौफीक मिल गई तो यूँ समझो गोया उस के उपर रहमत के दरवाज़े खुल गऐ। दुआ के सिवा कोई चिज़ तकदीर के फैस्ले में तरमीम नहीं करा सकती। और नेकी के सिवा कोई चिज़ उमर को नहीं बढ़ाती। दुआ इबादत का मग़ज़ है। मोमिन का हथयार है। और आसमान और ज़मीन का नूर है।

नमाज़ के बाद दुआ करते वक्त इस बात का ख्याल रखें कि में अर्श के निचे अपने खालि के आगे हाथ फैलाए होए हूँ। जो इतना बड़ा और अज़ीम है कि अगर उस से रोज़ाना एक लाख ख्वाहिश भी की जाऐं तो वह उनहें पूरी करने पर कुदरत रखता है। जब तक कि दिल मुतमइन न हो। दुआ करते रहे। दुओं को बार बार दुहराने से दिल में गदाज़ पैदा होता है। ऐसा गदाज़ जो आंखों के रास्ते से बह निकल्ता है। और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को अपने बन्दों के आंसू खूब पसंद हैं।

اوقات نماز کی وضاحت
औकाते नमाज़ की वज़ाहत

अल्लाह तआला का इरशाद है,,

पस अल्लाह की तसबीह बयान करो सूरज निकलने से पहले और सूरज गोरुब होने से पहले और रात होने से पर और दिन के किनारों पर।

ان الصلوة کانت علی المومنین کتبا موقوتا

तरजमा: बेशक नमाज़ मोमिनों पर वक्त मुकर्राह पर फर्ज है।

फजर की नमाज़:

इन्सानी ज़िन्दगी का तअल्लुक मुज़ाहिराती दुन्या और जिस्मानी आज़ा से है। जिस्मानी आज़ा को ताकत पहुँचाने के लिए इन्सान अपने काम करता है जिस से उस को मुज़ाहिराती दुन्या और आराम व आसाइश मोहैया हो। अल्लाह तआला ने दिन को काम और मआश के लिए बना या है ता कि बन्दा मुकर्राह औकात में मेहनत और मज़दूरी से जिस्मानी तकाज़े पूरे कर के ज़िन्दगी के माह व साल आराम व आसाइश से गुज़ारे। फजर की नमाज़ अदा करना दर अस्ल इस बात का इकरार करता है कि अल्लाह तआला

ने हमें नीन्द से जो आधी मौत है अक्लो शोउर के साथ बेदार किया और हमें इस काबिल बनाया कि हम अपने जिस्मानी तकाज़ों को पूरा करने के लिए जिद्दो जेहद और कोशिश करें फजर की नमाज़ अदा करने में जहाँ अल्लाह तआला के शुर्क की अदाइगी वहाँ ज़ेहन को इस बात की तरफ मुतवज्ह करना भी है कि अल्लाह तआला रज़्ज़ाक है। उस ने ही हमारे लिए वसाइल पैदा किए हैं। और हमें इतनी कुव्वत अता की है कि हम अल्लाह तआला की ज़मीन पर अपना रिज़्क तलाश करें। और बाइज़्ज़त ज़िन्दगी गुज़ारें। इस के इलावा जिस्मानी और रुहानी तौर पर जो फवाइद हासिल होते हैं वह यह हैं कि सिहत मंद शौआओं से हमारे अंदर ताकत और एनरजी (Energy) पैदा होती है। ऐसी ताकत और एनरजी जो तमाम मोजूदात को मुतहर्रिक रखने के लिए एक अज़ीम कुव्वत और ताकत है। इन शौआओं के अंदर वह तमाम हयातें (Vitamin) काफी मिकदार में मोजूद होते हैं। जो ज़िन्दगी को बरकरार रखने में अहम किरदार अदा करते हैं। नमाज़ी जब घर के चार दीवारी और बंद कमरों से निकल कर खुली हवा और साफ रौशनी में आता है तो उस को सांस लेने के लिए साफ फिजा मोयस्सर आती है। फिजा और हवा साफ हो तो तंदरुस्ती काईम रहती है। ख्वातीन के लिए घर को आंगन और मर्दों के लिए मस्जिदें ताज़ा हवा

और रौशनी फराहम करती हैं। ज़िन्दगी को काईम रखने के लिए बुंयादी चिज़ों में साफ हवा और रौशनी को बहुत ज़ियादा अहमीयत हासिल है। अगर आदमी कुच्छ अरसा हवा और रौशनी से महरुम रहे तो उस की जान को तरह तरह के रोग लग जाते हैं। और बिलआखिर टी बी जैसी खतरनाक बिमारीयों में मुब्तला हो जाता है। फजर की नमाज़ कुदरत का फैजान आम है कि आदमी इस प्रोग्राम पर अमल कर के बगैर किसी खास जिद्दो जेहद के ताज़ा हवा और रौशनी से मुस्तफेज हाता रहता है।और कई बिमारीयों से महफूज रहता है। सुब्ह सवेरे परिंदों के तराने, चिड़यों की चूं चूं , जान्वरों का खरामा खरामा मसताना वार ज़मीन पर चलना इस बात का इज़हार है कि वह सब अल्लाह तआला की तसबीह बयान करते हैं। और इस बात का शर्क अदा करते हैं कि अल्लाह तआला ने उन्हें रिज़्क तलाश करने के लिए उन्हें अज़सरे नौ एनेरजी और कुव्वत अता की है। फजर की नमाज़ अदा करने वाला बन्दा दोसरे तमाम मखलूकात के साथ जब इबादत और तसबीह में मशग़ूल हो जाता है तो दुन्या का पुरा माहोल मुसफ्फ मुजल्ला और पुर अंवार हो जाता है। और माहोल की इस पाकिजगी से इन्सान को रुहानी और जिस्मानी सिहत नसीब होती है।

ज़ोहर की नमाज़ः

सुब्ह से दोपहर तक आदमी अपनी मआश की होसुल या ज़िन्दगी को काईम रखने के लिए खुद्र व नोश के इन्तिजाम में लगा रहता है। आसाब थक जाते हैं। और जिस्म निढाल हो जाता है। जिस्मानी तकाज़ों के लिए काम पुरा करने के बाद आदमी जब वज़ू करता है तो उस के उपर सोरुर व कैफ की एक दुन्या रौशन हो जाती है। सूरज की तमाज़त खतम हो कर जब ज़वाल शुरु हो ता है तो ज़मीन के अंदर से एक गैस बुखारात की शक्ल में खारिज होती है। यह गैस इस कदर ज़हरीली होती कि अगर आदमी के उपर असर अंदाज़ हो जाए तो वह किस्म किस्म की बिमारीयों में मुबतला हो जाता है। दिमागी निज़ाम इस हद तक दरमह बरहम हो सकता है कि उस के उपर एक पागल आदमी का गुमान होता जब कोई बन्दा ज़ेहनी तौर पर इबादर में मशगुल हो जाता है तो उसे नमाज़ की रुहानी लहरें उस ज़हर आलूद गैस से महफूज रखती है। उन नूरानी लहरों से यह ज़हरीली गैस बे असर हो जाती है।

असर की नमाज़ः

ज़मीन दो तरह से गरदिश कर रही है। एक गरदिश है मेहवरी, और दोसरी गरदिश है तोलानी, यानी एक गरदिश वह अपने ही मेहवर पर कर रही है। और दोसरी गरदिश वह

सूरज का कर रही है। ज़वाल के बाद ज़मीन की गरदिश में कमी वाके हो जाती है। फिर रफता रफता यह गरदिश कम होती चली जाती है। असर के वक्त तक यह गरदिश इतनी कम हो जाती है कि हवास के उपर दबाओ पड़ने लगता है। इन्सान, हैवान, चरिंद, परिंद, सब के उपर दिन के हवास के बजाए रात के हवास का दरवाज़ा खुलना शुरु हो जाता है। और शोउर मगलूब होने लगता है। हर ज़ि फहम इन्सान इस बात को महसुस करता है कि असर के वक्त उस के उपर ऐसी कैफियत तारी हो जाती है कि जिस को थकान कहते हैं। यह थकान शोउरी हवास पर ला शोउरी हवास की गिरफ्त का नतीजा होता है। असर की नमाज़ शोउर को इस हद तक थकने से रोक देती है जिस से दिमाग पर खराब असरात मुरत्तब हूँ। वज़ू और असर की नमाज़ काईम करने वाले बन्दे के शोउर में इतनी ताकत आ जाती है कि वह लाशोउरी निज़ाम को आसानी से कोबुल करता है। और अपनी रुह से करीब हो जाता है। दिमाग रुहानी तहरीकात कोबुल करने के लिए तैयार हो जाता है।

मगरीब की नमाज़ः

आदमी बिलफेल इस बात का शुर्क अदा करता है कि अल्लाह तआला ने रिज़्क अता फरमाया है। ऐसा घर और बेहतीन रफीके हयात अता की। जिस ने उस की और उस

के बच्चों की गिज़ाइ ज़रुरीयात पुरी की है। शुर्क के जज़्बात से वह सरुर और खुश व खर्रम और पुर कैफ हो जाता है। उस के अंदर खालिके काइनात की वह सिफात मुतहर्रिक हो जाती है जिन के ज़रिए काइनात की तखलीक होइ। जब वह अपने घर वालों के साथ पुर सोकुन ज़ेहन से महवे गुफ्तगु हो ता है तो उस के अंदर की रौशनीयां बच्चों में बराहे रास्त मुंतकिल होती है। और उन रौशनीयों से औलाद के दिल में मां, बाप का एहतराम और वकार काईम होता है। बच्चे गैर इरादी तौर पर मां बाप की आदतों को तेज़ी के साथ अपने अंदर जज़्ब करते हैं। और उन के अंदर मां बाप के लिए प्यार व इश्क का जज़बा पैदा होता है। मुख्तसर यह कि मगरिब की नमाज़ सहि तौर पर पाबंदी के साथ अदा करने वाले बन्दों की औलाद सआदत मंद होती है और मां बाप की खिदमत करती है।

इशा की नमाज़ः

इशा की नमाज़ ग़ैब से मुतारिफ होने और अल्लाह तआला का इरफान हासिल करने का एक खोसूसी प्रोग्राम है कुयों कि इशा के वक्त आदमी रात के हवास में दाखिल हो जाता है यही वज्ह है कि रुहानी तालीम व तरबीयत के असबाक और औराद व वज़ाईफ इशा की नमाज़ के बाद पुरे किए जाते हैं। इस लिए कि जब आदमी रात के हवास में

होता है तो वह ला शौउरी और रुहानी तौर पर ग़ैब की दुन्या से करीब और बहुत करीब हो जाता है। और उस की दुआऐं कोबुल करली जाती हैं। इशा की उस नयामत का शुर्किया है कि अल्लाह तआला ने उसे बेदारी हवास से नजात फरमा कर वह ज़िन्दगी अता फरमा दी है जो नाफरमानी के इरतिकाब से पहले जन्नत में हज़रते आदम अलैहिस्सलाम को हासिल थी। यही वह हवास हैं कि जिन में आदमी ख्वाब देखता है और ख्वाब के ज़रिए उस के उपर मसाइल व मुशकिलात और बिमारीयों से महफुज रहने का इनकिशाफ होता है। इशा की नमाज़ अदा करने के बाद सोने वाले बन्दे की पुरी रात ला शौउरी तौर पर इबादत में गुजरती है और उस के उपर अल्लाह की रहमत नाज़िल होती रहती है। ऐसे बन्दे के ख्वाब सच्चे और बशारत पर मबनी होते हैं। ख्वाब हमारी ज़िन्दगी का निस्फ हिस्सा है और हमें बता ता है कि इन्सान के अंदर ऐसे हवास भी काम करते है जिन के ज़रिए इन्सान के उपर ग़ैब का इनकिशाफ हो जाता है। ख्वाब और ख्वाब के हवास में हम टाइम और स्पेस का हाथ खेलोना नहीं बलकि टाइम और स्पेस हमारे लिए खेलोना होते हैं। ख्वाब में चुंकि स्पेस और टाइम की जकड़ बंदियाँ नहीं हैं इस लिए हम ख्वाब में उन हालात का मुशाहिदा करते हैं जो ज़मान और मकान से मावरा है। और हमारा मुशाहिदा है

कि सब का सब ग़ैब और मुसतकबिल की निशादही करता है। आसमानी सहाइफ और कुरआने पाक में मुसतकबिल की निशानदगी करने वाले ख्वाबों का एक सिलसिला है जो नौए इन्सानी को तफक्कुर की दावत देता है कि कुरआने पाक के इरशाद के मुताबिक ख्वाब में ग़ैब का इनकिशाफ सिर्फ अंबियाऐ किराम अलैहिमीस्सलाम के लिए मखसुस नहीं है बलकि हर इन्सान अल्लाह के इस कानुन से फैजयाब है। तारीख के सफहात में ऐसे कितने ही ख्वाबों का तज़किरा मिलता है जो मुसतकबिल के आइनादार होते हैं। ख्वाबों सिर्फ ख्वाब देखने वाले के मुसतकबिल का इनकिशाफ ही नहीं होता, बलकि बाज़ औकात यह ख्वाब पुरे मुआशेरे पर भी असर अंदाज़ होते हैं। मसलन सुरऐ यूसुफ में मुसतकबिल के आइनादार ख्वाबों का तज़किरा इस तरह है कि हज़रते यूसुफ अलैहिस्सलाम ने कहा ए मेरे बाप में ने ख्वाब में देखा है कि गियारह सितारे हैं और सूरज व चाँद मैं ने देखा है कि यह बस मुझे सज्दा कर रहे हैं। हज़रते याकुब अलैहिस्सलाम ने फरमाया मेरे बेटे इस ख्वाब का तज़किरा अपने भाईयों के सामने न करना। ख्वाब की ताबीर में यह बात उनके सामने आगइ थी कि हज़रते यूसुफ अलै हिस्सलाम के भाई उनके जानी दुशमन हो जाऐं गे। हज़रते यूसुफ अलै हिस्सलाम मिर्स के जेल में कैद थे। दो कैदीयों ने

जिन में एक बादशाह का साकी था। और दुसरा बावरची और वह बादशाह को ज़हर देने की साज़िश में पकड़े गऐ थे। हज़रते यूसुफ अलै हिस्सलाम को अपना ख्वाब सुनाया। एक ने बताया कि मैं ने ख्वाब में देखा है कि अंगुर निचोड़ रहा हुँ। दुसरे ने कहा मैं ने यह देखा कि सर पर रोटियाँ उठाए हुवे हुँ। और परिन्दे उसे खा रहे हैं। हज़रते यूसुफ अलै हिस्सलाम ने उन ख्वाबों की ताबीर में फरमाया अंगुर निचोड़ ने वला बरी हो जाएगा। और उसे फिर से साकी गिरी सोंप दी जाए गी। और दुसरा सुली पर चढ़ाया जाए गा। उस का गौश्त मुरदा खोर खाऐंगे। अज़ीज़े मिर्स ने तमाम दरबारीयों को जमा कर के कहा मैं ने ख्वाब में देखा है कि सात मोटी गाऐं है उनहें सात दुबली गाऐं निगल रही है। और सात बाली हरी हैं। और सात सुखी। बादशाह के दरबार मे मोजूद लोगों ने इस ख्वाब को बादशाह की परेशान ख्याली का मुज़हर करार दिया। लेकिन हज़रते यूसुफ अलै हिस्सलाम ने इस ख्वाब की ताबीर यों फरमाइ कि सात बरस लगातार खेती करते रहो गे उन सात बरसों में गल्ला की फरावानी होगी। और उसके बाद सात बरस मुसिबत के आऐंगे और सख्त कहत पड़े गा। एक दाना भी बाहर नहीं आऐगा। उन सात सालों में वही गल्ला काम आएगा जो पहले सात सालों में ज़खीरा कर लिया जाऐगा। ग़ौर तलब बात यह है कि कुरआने करीम में

बयान करदा ख्वाबों में एक भी ख्वाब नबी का है और तीन आम इन्सानों के हैं।

ख्वाब में पेशनगोइयाँ:-

हज़रते इमामे रब्बनी मुजद्दिदे अलफे सानी र.अ. की विलादत से पहले उन के वालिद बुज़ुर्गवार ने ख्वाब में देखा कि दुन्या में अंधेरा छाया होवा है सुव्वर और बंदर लोगों को हलाक कर रहे हैं। यका एक उनके सिने से नूर की एक शोआ निकली और फिजा में फैल गइ। और नूरानी फिजा में उस से एक तख्त ज़ाहिर होवा उस तख्त पर एक शख्स बैठा होवा है। और उसके सामने ज़ालिमों और मुलहिदों को ज़ब्ह किया जा रहा है। और कोइ बलंद आवाज़ से पुकार रहा है हक आया और बातिल मिट गया। बातिल के मुकद्दर में मिट जाना ही है। ताबीर यह बताइ गइ है कि आप के यहाँ एक ऐसा लड़का पैदा होगा उस के ज़रिए हक का बोल बाला होगा। कुर्फ और इलहाद का खातमा हो जाए गा।

ताजुल औलिया हज़रते बाबा ताजुद्दीन नागपूरी र.अ.की वालिदा माजिदा ने हज़रत ताजुद्दीन बाबा र.अ. की पैदाइश से पहले ख्वाब में देखा कि एक मैदान है और उस मैदान के अंदर हज़ारों शहर आबाद है। सरदी का मोसम है चौदहवीं की रात है हर शख्स चाँन्दी के हुस्न से सरशार और पुर कैफ है। हज़रत ताजुद्दीन बाबा की वालिदा ने देका कि

चाँन्द आसमान से टुटा और उस के गोद में आ गया।

हारुन रशीद की मलिका ज़ुबेदा का ख्वाब भी काबिले ग़ौर है। मलिका ने अपने बेटे मामुन रशीद की पैदाइश की रात ख्वाब देखा कि चार औरतों ने मोलुद को कफन में लपेट ना शुरु कर दिया है। यह काम करते वक्त एक औरत ने दुसरी औरत से कहा कम उर्म, तंग दिल, बद खूँ बादशाह, दुसरी ने कहा बद चलन, ज़ालिम, ना समझ और फोज़ूल खर्च फरमा रवाँ। तेसरी ने कहा बे वफा,कम अक्ल व नाकारा और न तजरबा कार हुकमरां, चौथी ने कहा धोके बाज़, अय्याश और मग़रुर ताजदार, तारीख शाहिद है कि हालात और वाकियात इसी तरह पैश आइ जिस तरह ख्वाब में निशादगी की गई थी। मुनदरजा बाला बयान करदा हज़ारों में से चन्द ख्वाब हैं। जो हमें उस तफक्कुर की दावत देते हैं कि ख्वाब हमारी ज़िन्दगी का उस तरह हिस्सा है जिस तरह बेदारी है।

نماز اور تندرستی

नमाज़ और तन्दुरुस्ती

वरज़िश न सिर्फ अंदूरूनी आज़ा मसलन दिल, गुरदे, जिगर, फैफड़े, दिमाग, आंतों, मआदह, रीडह की हडडी, गरदन, सिना और तमाम अकसाम के गोदुद की नशवो नुमा करती है। बलकि जिस्म को भी सडोल और खुबसुरत बनाती है। यहाँ तक कि कुच्छ वरज़िश ऐसी भी हैं जिन से उर्म में इज़ाफा होता है। ऐसी वरज़िशें भी हैं जिन के ज़रिए आदमी गैर मामुली तौर ताकत का मालिक बन जाता है। और कुच्छ ऐसे भी हैं जिन से चेहरे के नक्श व निगार खुबसुरत और हसीन नज़र आने लगते हैं। बड़ी उर्म का आदमी हर वरज़िश नहीं कर सकता। लेकिन नमाज़ एक ऐसा अमल है जिस पर हर बन्दा आसानी के साथ अमल पैरा हो सकता है। उर्म के साथ साथ आदमी की वरीदें (Veins) शरयाने (Arteries) और अज़लात की ताकत कम हो जाती है। और उन के अंदर ऐसे माद्दे पैदा हो जाते है जिन की वज्ह से बेशुमार अमराज़ लाहिक होने लगते हैं। मसलन घैटया, अरकुन्निसा, अमराज़े कल्ब, हाइ बल्ड परेशर और बेशुमार दोसरे दिमागी अमराज़। इन बेशुमार बिमारीयों से नजात पाने के लिए नमाज़ हमारे लिए

कुदरत का एक बेहतरीन इलाज है। वरज़िश का यह वसुल है कि अगर आप किसी वरीदे शरयान या किसी मखसुस अज़्व की सखती दुर करना चाहते हैं तो सब से पहले जिस्म को ल्किुल ढीला छोड़ दिजऐ। फिर उस हिस्सए जिस्म में तनाओ पैदा किजए। और कुच्छ देर तनावो की हालत में बर करार रखने के बाद जिस्म को फिर ढीला छोड़ दिजए। माहेरीने वरज़िश ने वरज़िश के उसूलो ज़वाबित और वरज़िश के लिए नशीसतें भी मुतय्यन किए है। अलग अलग अम्राज़ के लिए अलग अलग नशिस्त है। मसलन रिढ की हडडी के मर्ज़ को रफा करने के लिए एक अगल अंदाज़ से नशिस्त है। और दिल की तकलीफ से नजात पाने के लिए ऐसा तरीका तजवीज़ किया जाए गा जिस से गुरदे सिहत मंद हो जाऐं गे। हम यह बात जान चुके हैं कि हमारे प्यारे नबी ﷺ ने नमाज़ अदा करने के तरीके में सब तरीकों को समो दिया है। जिस की नौए इन्सानी को ज़रुरत है ख्वाह वह ज़ेहने एकसुइ हो, आलाम व मसाइब से निजात पाना हो, ग़ैब की दुन्या में सफर करना हो, अल्लाह इरफान हासिल करना हो या जिस्मानी सिहत हो। नमाज़ मजमुए औसाफव कमाल है। आइए तलाश करें कि नमाज़ और हमरी सिहत का आपस में क्या ताअल्लुक है।

हाइ बल्ड परेशरः-

नामज़ काईम करने के लिए हम सब से पहले वज़ू का एहतमाम करते हैं। वज़ू के दौरान जब हम अपना चेहरा और कहनीयों तक हाथ धोते हैं। पैरों को धोते या मस्ह करते हैं तो हमारे अंदर दौड़ने वाले खुन को एक नई ज़िन्दगी मिलती है। जिस से हमें सोकुन मिलता है उस तसकीन से हमारा सारा आसाबी निज़ाम(Nervous System)मुता अस्सीर होता है। पुर सोकुनी आसाब से दिमाग को आराम मिलता है। आज़ाए रयेसीया सर, फेफड़े , दिल और जिगर वगैरह की कार करदगी बहाल होती है। हाइ बल्ड परेशर कम हो कर नॉरमल हो जाता है। चेहरा पुर रवन्नक और हाथों में रआनाई और खुबसुरती आ जाती है। वज़ू करने से आसाब का ढीला पन खतम हो जाता है। आंखें पुर कशिश हो जाती हैं। सुसती और काहेली दुर हो जाती है। आप कभी भी तजरबा कर सकते हैं। हाइ बल्ड परेशर के मरीज़ों को वज़ू कराऐं। बल्ड परेशर नॉरमल हो जाऐ गा।

घटया का इलाजः-

जब हम वज़ू करने के बाद नमाज़ के लिए खड़े होते हैं तो हमारा जिस्म ढीला होता है, लेकिन जब नमाज़ की नीयत के लिए हाथ उठाते है तो कुदरती तौर पर जिस्म में

तनाओ पैदा हो जाता है। इस हालत में आदमी के उपर से सफली जज़्बात का ज़ोर टुट जाता है। सीधे खड़े होने में उम्मुद्दिमाग से रौशनियाँ चल कर रीढ की हडडी से होती होवइ पुरे आसाब में फैल जाती है। यह बात सब जानते हैं कि जिस्मानी तंदुरुस्ती के लिए रीढ की हडडी को एक खास मकाम हासिल है। और उमदा सिहत का दारो मदार रीढ की हडडी की लचक पर है। नमाज़ में क्याम करना घुटनों, टुखनों और पैरों से उपर पिन्डलीयों और पंजों और हाथ के जोड़ों को कवी करता है। गठया के दर्द को खतम करता है। लेकिन शर्त यह है कि जिस्म सीधा रहे और टांगों में खम वाके न हो।

जिगर के अमराज़ः-

झुक कर रुकू में दोनों हाथ इस तरह रखे जाऐं की कमर बिलकुल सीधे रहे। और घुटने झुके हुवे न हों। इस अमल से मादे को ताकत पहुँचती है। निज़ामे हज़्म दुरुस्त होता है। कब्ज़ दुर होता है। मादे की दोसरी खराबीयाँ नीज़ आंतों और पेट के अज़लात का ढीला पन खतम हो जाता है। रुकू का अमल जिगर और गुरदों के अफआल को दुरुस्त करता है। इस अमल से कमर और पेट की चरबी कम हो जाती है। खुन का दौरान तेज़ हो जाता है। चुँकि दिल और सर एक सुध में हो जाते हैं। इस लिए दिल के लिए खुन को सर के

तरफ पंप करने में आसानी हो जाती है। और इस तरह दिल का काम कम हो जाता है। और उसे आराम मिलता है जिस से दिमागी सलाहीयतें उजागर होने लगती हैं। अगर तसबीह "सुबहाना रब्बीयल-अज़ीम" पर गौर कर के तीन से सात बार तक पढ़ी जाऐ तो मुराकिबा की सी कैफीयत पैदा होने लगती है। दौराने रुकू हाथ चुँकि नीचे की तरफ होते हैं। इस लिए कंधों से लेकर हाथ की उंगलीयों तक पुरे हिस्से की वरज़ीश हो जाती है। जिस से बाज़ु के पुठे (Muscies) ताकतवर हो जाते हैं। और जो फासिद माद्दे बुढ़ापे की वज्ह से जोड़ों में जमा होते हैं। अज़ खुद खारिज हो जाते हैं।

पेट कम करने के लिए रुकू के बाद सीधे खड़े हो कर हम सज्दे में जाते हैं। सज्दे में जाने से पहले हाथ ज़मीन पर रखे जाते हैं। यह अमल रीढ की हडडी को मज़बूत और लचकदार बनाता है। और ख्वातीन के अंदरुनी आसाब को ताकत बख्शता है। अगर रुकू के बाद सज्दे में जाने की हालत में जलदी न की जाए तो यह अंदरुनी जिस्मानी आज़ा के लिए एक नीयामत साबित होती है। सज्दे की हालत एक वरज़ीश है जो रानों के ज़ाइद गौश्त को घटाती है और जोड़ों को खोलती है। अगर कुलहों के जोड़ों में खुशकी आजाए या चिकनाइ कम हो जाए तो इस अमल से यक कमी

पुरी की जाती है। और बढ़ा होवा पेट कम हो जाता है। मुनासिब पेट से जिस्म सडोल और खुबसुरत लगता है।

अलसर का इलाजः-

जिन लोगों के मादे में जलन रहती है और ज़खम होता है। सही सज्दे के अमल से यह मर्ज़ खतम हो जाता है। सज्दे में पैशानी ज़मीन पर रखी जाती है। इस अमल से दिमाग ज़मीन के अंदर दौड़ने वाली बरकी रौ से बराहे रास्त हम रिश्ता हो जाता है। और दिमाग की ताकत में कइ गुना इज़ाफा हो जाता है।

जुम्ला दिमागी अमराज़ः-

खोशू व खोज़ू के साथ देर तक सज्दा करना दिमागी अमराज़ का इलात है। दिमाग अपनी ज़रुरत के मुताबिक खुन से ज़रुरी अज्ज़ा हासिल कर के फासिद माद्दों को खुन के ज़रीए गुरदों में वापस भेज देता है। ताकि गुरदे उनहें पैशाब की शकल में बाहर निकाल दे। सज्दे से उठते वक्त इस बात का खास ख्याल रखा जाए सर झुका होवा हो। और बाज़ू सीधे रहें। और उन में कदरीं तनाओ हूँ। उठते वक्त रान पर हथेलियाँ भी रखें। कमर को आसिता से उठाऐं और फिर खड़े हो जाऐं या बैठ जाऐं।

चेहरे पर झरयाँः-

रीढ की हडडी मे हराम मग़ज बिजली का एक ऐसा तार है जिस के ज़रिए पुरे जिस्म को हयात मिलती है। सज्दा करने से खुन का बहाओ जिस्म के उपरी हिस्सों की तरफ जाता है। जिस से आंखें ,दांत और पुरा चेहरा सैराब होता रहता है। और रुखसारों पर से झरयां दुर हो जाती हैं। याद दाश्त सही काम करती है। फहमो फरासत में इज़ाफा हो जाता है। आदमी के अंदर तफक्कुर करने की आदत बढ़ जाती है। बुढ़ापा देर तक नहीं आता। सो साल की उम्र तक भी आदमी चलता फिरता है। और उस के अंदर एक बरकी रौ दौड़ती रहती है। जो आसाब को ताकत पहुंचाने का सबब बनती है। सही तरीके पर सज्दा करने से बन्द नज़ला, सिक्ल समाअत और सर दर्द जैसी तकलीफों से निजात मिल जाती है।

जिन्सी अमराज़ः-

दोनों सज्दों के दरमियान बैठना (जलसा) घटनों और पिंडलीयों को मज़बूत बनाता है। इस के इलावा रानों में जो पुठे अल्लाह तआला ने नस्ल कशी के लिए बनाए हैं उन को एक खास कुव्वत अता करता है जिस से मर्दाना और ज़िनाना कमज़ोरीयां दुर हो जाती हैं। ताकि इन्सान की

नस्लें दिमागी और जिसमानी एतबार से सिहत मंद पैदा हो।

सीने के अमराज़ः-

नमाज़ के इवत्ताम पर हम सलाम फैरते है। गर्दन फैरने के अमल से गर्दन के अज़लात को ताकत मिलती है।और वह अमराज़ जिन का तअल्लुक उन अज़लात से है लाहिक नहीं होते और इन्सान हश्शाश व बश्शाश और तवाना रहता है। नीज़ सीने और पसली की हडडी का ढीला पन खत्म हो जाता है। सीना चोड़ा और बड़ा हो जाता है। इन सब वरज़ीशों का फाइदा उस वक्त पहुंचता है जब हम नमाज़ पुरी तवज्ह और दिल जमी और उस के पुरे आदाब के साथ अदा करें। और नमाज़ में जल्द बाज़ी न करें।

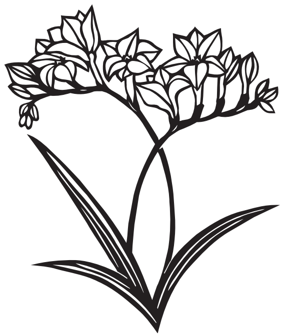

نماز ذکر ہے

नमाज़ ज़िक्र हैः-

اقم الصلوٰۃ لذکری (सुरए ताहा, आयत, ४१)

तरजमाः मेरे ज़िक्र के लिए नमाज़ काईम करो।

इस आयते मुकद्दसा की रौशनी में यह बात वाज़ेह हो जाती है कि नमाज़ भी ज़िकरुअल्लाह की एक सुरत है। एक और आयते पाक को बसुरते नमाज़ के मिस्ल करने का हुक्म है।

فاذکروا اللہ قیاما وقعودا وعلی جنوبکم

तरजमाः पस अल्लाह का ज़िक्र करो क्याम यानी खड़े और कोउद यानी बैठे और जोनूब यानी करवटों पर लेटे जो सज्दा के करीब की हालत है।

जिस नमाज़ में अल्लाह तआला का ज़िक्र न हो ऐसी है जैसे किसी जिस्म में रुह न हो। हदीसे पाक की रौशनी में ज़ाकिर को ज़िन्दा और गाफिल को मुरदा कहा गया है।

مثل الذی یذکر اللہ والذی لایذکر اللہ مثل الحی والمیت

तरजमाः जो शख्स अल्लाह का ज़िक्र करता है। और जो नहीं करता उन दोनों की मिसाल ज़िन्दा और मुरदा की सी है यानी ज़ाकिर ज़िन्दा और गाफिल मुरदा के मान्दिद है।

सुफीयाए किराम फरमाते हैं कि नमाज़ ऐने ज़िक्रे

इलाही है। यह भी याद रहे कि ज़िक्र तसौउरे मज़कूर के बगैर नहीं होता। जैसा कि नबीए करीम ﷺ का इरशाद है कि तुम इबादत ऐसी करो (होज़ूर कल्ब) जैसा कि तुम अल्लाह को देख रहे हो। अगर ऐसा नहीं तो (यकीन रखो कि अल्लाह तुमहें देख रहा है)

लिहाज़ा मज़कूर का तसौउर और तसौउर के लिए मज़कूर लाज़िम व मलज़ूम है और यह भी याद रहे कि ज़िक्र के भी तीन दरजे हैं।

ذکر اللسان لقلقة وذکر القلب وسوسه وذکر الروح مشاهدة

१) ज़बानी ज़िक्र लकलका है। २) कल्बी ज़िक्र वसवसा है। ३) और रुही ज़िक्र मुशाहिदा है। जब तक रुह से ज़िक्र न हो तो मज़कूर का मुशाहिदा ना मुमकिन है। और एक मकाम ऐसा भी आता है जहाँ तसौउरे मज़कूर ही ज़िक्र बन जाता है। और اقم الصلوٰة لذکری

तरजमाः मेरे ज़िक्र के लिए नमाज़ काईम करो। के मानी वाज़ह हो जाते हैं कि इस में हुक्म तकीमिस्सलात में दवामे ज़िक्र की तरफ इसारा मोजूद है क्यों कि तकीम इकामत से मुशतक है और ज़िक्रे काईम जो मुराकिबए इलमी से इबारत है वही मरतबए इलमुलयकीन का नतीजा है। हकीकी नमाज़ वह है जो तजल्लीए रुह के सबब मकामे शोहूद है। जहाँ मासिवा अल्लाह मादूम है। दर हकीकत यही नमाज़

मेराजूल मुमेनीन है। क्यों कि मेराज उरुजे मकामे कुर्ब औअदना से इबारत है। इस लिए जो नमाज़ मकामे कुर्ब है महल्ले शोहूद करार पाती है इरशादे नबवी ﷺ है।

الصلوٰة قرة عینی

यानी नमाज़ मेरी आंखों की ठंडक है (मसनदे अहमद व निसाइ)

इस का मनशा यह है कि ऐसी नमाज़ यकीनन हिजाबाते गैरियत को दूर करने वाली बाइसे कश्फे हकीकत है। इस लिए होज़ूर अकरम ﷺ फरमाते हैं कि बे शक बन्दा जब नमाज़ के लिए खड़ा होता है तो तमाम हिजाबात उठा देए जाते हैं जो अल्लाह तआला और बन्दे के दरमियान में होते हैं (तिबरानी शरीफ)

इस हदीसे पाक में रसूले अकर ﷺ का शोहूदे रब को मशरुत बिल्लफ्ज कामा फरमाना उस भेद की जानिब इसारा है खि दामे क्याम से सलात ऐनुलयकीन में महबुबीन को शोहूदे दवामी हासिल होता है। जो शोहूदे दवाम के काबिल है।

الذی علی صلاتھم دائمون

तरजमाः जो हमेशा अपनी नमाज़ में है (सुरए मआरिज)

نام احمد شکل نماز ھے

नामे अहमद शकले नमाज़ है

कौमा अलीफ, हा रुकू , और मीम सज्दा जलसा दाल
नकशाए नमाज़ी यूँ नमाज़े इश्क का खैंचा करे

अल्लाह तआला ने तमाम मखलूकात की इबादत का तरीका जुदा गाना रखा है। मसलन कोइ फरिशता क्याम में है। कोइ फरिशता रुकू में तो कोइ फरिशता सज्दे में मसरुफ है। दरख्त और पहाड़ क्याम की हालत में हैं। तमाम चोपाए रुकू की हालत में तो तमाम रेंगने वाले हैवानात सांप, मछली वगैरह सज्दे की हालत में हैं। परिंदे जब आसमानों में उड़ते हैं तो दानों परों को इसी तरह हिलाते हैं जैसा कि हम नीयत बांधते वक्त दोनों हाथों को कानों तक ले जाते हैं। फिर ज़ेरे नाफ लाते है।

इन तमाम मखलूकात की इबादत को अल्लाह तआला ने नमाज़ में जमा फरमा दिया है यानी नमाज़ तमाम मखलूकात की इबादत का मजमूआ है। और कुल मखलूकात की इबादत का सवा नामज़ में है। बेशक नमाज़ तो अल्लाह तआला की है। मगर इस में तसवीर व अदा अहमदे मुरसल मोहम्मद मुसतफा ﷺ की है। यानी जब बन्दा नमाज़ में क्याम की हालत में होता है तो इस्म शरीफ अहमद का पहला हर्फ अलीफ की मान्निद होता है और जब

रुकू करता है तो हर्फ हा बन जाता है और जब हालते सज्दा में होता है तो शक्ले मीम नज़र आता है और जब जलसे में बैठता है हो दाल की सुरत में होता है। नमाज़ इस्मे अहमद का मज़हर है। इस्मे अहमद के मानी हैं अल्लाह की बे हद हम्द करने वाला।

होज़ूर ﷺ के दो ज़ाती नाम हैं , एक अहमद ﷺ, दोसरा मोहम्मद ﷺ है। जब सरकारे दो जहाँ ﷺ अर्श आज़म पर जलवा अफरोज़ थे तो वहाँ आप ﷺ अल्लाह की बे हद हम्दो सना में मसरुफ थे। इसी लिए आप ﷺ का इस्म शरीफ अल्लाह तआला ने अहमद रखा। नमाज़ को इस्म अहमद का मज़हर बनाने का राज़ यही है कि बन्दा जब हालते नमाज़ में अल्लाह तआला की हम्दो सना करे तो उस की रुह अर्शे की सैर करके मेराजूल मुमेनिन के तोहफे से सरफराज़ हो। और जब सरकारे दो जहाँ ﷺ फर्श पर रवन्नक अफरोज़ होवे तौ आप ﷺ का इस्म शरीफ मो. ﷺ होवा। जब नमाज़ी नमाज़ से फारिग होता है तो इस्म मोहम्मद ﷺ की तजल्ली उस को घेर लेती है। और वह नूरे मोहम्मदी की तजल्ली से मनौवर हो जाता है। तमाम मखलूक उस की तारीफ में मसरुफ हो जाती है। और वह सब का प्यारा बन जाता है।

کیا آپ جانتے ہیں؟

क्या आप जानते हैं?

(१) नमाज़े फजर हज़रते आदम अलैहिस्सलाम ने पढ़ी जब उनकी तौबा कोबूल होवइ, नमाज़े ज़ोहर हज़रते इब्राहहिम अलैहिस्सलाम ने पढ़ी हज़रते इसमाईल का फिदया दुंबा की सुरत में आने पर, नमाज़े असर हज़रते औज़ेर अलैहिस्सलाम ने पढ़ी जब सो बरस के बाद आप ज़िन्दा होवे, नमाज़े मगरिब हज़रते दाउद अलैहिस्सलाम ने पढ़ी अपनी तौबा कोबूल होने पर मगर चार रकअत की नीयत बांधी थी तीन रकअत पर सलाम फैर दिया क्यों की थक गए थे। लिहाज़ा मगरिब में तीन ही रकअतें रह गई। नामज़े इशा हमारे होज़ूर ﷺ पढ़ी। बाज़ ने फरमाया कि हज़रते मुसा अलैहिस्सलाम ने पढ़ी जब तूर पर आग लेने गए वहाँ नबुवत मील गइ। वापसी में बीवी को बखैरियत पाया कि बच्चा पैदा हो चुका था।

(२) यहुदीयों की नमाज़ में रुकू नहीं होता।

(३) हज़रते अब्दुल्लाह इबने मसउद र.अ. फरमाते हैं हम हबशा की हिजरत से पहले मक्का में बहालते नमाज़ होज़ूर ﷺ को सलाम करते थे, आप जवाब देते थे। जब हम हिजरते हबशा से पावस आए फिर हम ने सलाम किया तो आप ने जवाब न दिया बलकि नमाज़ से फारिग हो कर

इरशाद फरमाया कि खुदा ने नमाज़ की हालत में कलाम की ममानीअत फरमाइ है।

(४) शुरु इस्लाम में मेराज से पहले तेरह बरस तक कोइ इबादत न थी सिर्फ होज़ूर ﷺ को मान्ना इबादत था। उस वक्त फौत होने वाले मोमिन सब जन्नती थे।

(५) ओलोमा फरमाते है कि दोसरी मस्जिदों में सफ का दायां हिस्सा बाऐ से अफजल होता है मगर मस्जिदे नबवी में बायां हिस्सा दाऐं से अफजल है क्यों कि वह रौज़ऐ मुत्तहहरा से करीब है।

(६) इस्लाम में पहले सिर्फ अकीदऐ तौहीद फर्ज होवा फिर सुरऐ मुज़म्मिल वाली नमाज़ यानी रात की, फिर पंजगाना नमाज़ की फरजीयत से नमाज़े शब की फरजीयत मनसूख हो गई फिर हिजरत के बाद रोज़े और ज़कात फरज होवा।

(७) सब से पहले आज़ान हज़रते जिबरइल अलैहिस्सलाम ने मेराज की रात बैतुल-मुकद्दस में दी जब होज़ूर ﷺ ने सारे अंबिया को नमाज़ पढ़ाइ। मगर मुसलमानों में हिजरत के बाद शुरु हुवइ। सब से पहले फजर के वक्त आज़ान दी गई।

(८) नमाज़ के इलावा नो जगह आज़ान कहना मुसतहब है बच्चे के कान में, आग लगते वक्त, जंग में, जिन्नात के गलबे के वक्त, गमज़दा और गुस्सा वाले के कान में,

मुसाफिर जब रास्ता भुल जाए, मिरगी वाले के पास, मय्यत को दफन करने के बाद कब्र पर।

(९) अगर पूरी कौम की नमाज़ रह जाए तो कजा बा जमाअत अदा की जाए गी और उस के लिए आज़ान व इकामत भी होगी।

(१०) मस्जि की झाड़ू जन्नत की हुरौं का महर है।

(११) नबीए अकरम ﷺ फरमाते हैं कि जब इन्सान वज़ू में हाथ धोता है तो उस के हाथों से किए होवे सारे गुनाहे सगीरा माफ हो जाते हैं और जब कुल्ली करता है तो मुंह से किए होवे गुनाह माफ हो जाते हैं जब मुंह धोता है है तो आंखों से किए होवे गुनाह माफ हो जाते हैं जब सर का मस्ह करता है तो सर के गुनाह (बद गुमानी बुरे ख्यालात वगैरह) माफ हो जाते हैं जब पाओं धोता है तो पाओं के किए होवे गुनाह माफ हो जाते हैं।

(१२) सन दो हिजरी माहे शाबान बरोज़ दो शुंबा को नमाज़े ज़ोहर से अल्लाह तआला ने काबे की तरफ मुंह करके नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया। बाज़ रवायतों में आया है कि निस्फ रजब सन दो हिजरी दो शुंबा के रोज़ किब्ला तबदील किया गया।

(१३) वज़ू की फरज़ीयत हिजरत के चार पांच साल बाद होवई।

(१४) रसूले खुदा ﷺ ने फरमाया नमाज़ जन्नत की कुंजी है और नमाज़ की कुंजी तहारत।

(१५) जो शख्स साल भर आज़ान कहे और उस पर उजरत तलब न करे तो क्यामत के दिन वह बुलाया जाए गा और जन्नत के दरवाज़े पर खड़ा किया जाए गा और उस से कहा जाए गा जि के लिए तू चाहे शफाअत कर।

(१६) हदीस में है कि मोअज़्ज़िन का हशर यूं हो गा कि जन्नत पर सवार होंगे उन के आगे हज़रते बिलाल र.अ. होंगे सब के सब बलंद आवाज़ से आज़ान कहते हुवे आऐं गे लोग उन की तरफ नज़र करेंगे पुछें गे यह कोन लोग हैं कहा जाए गा यह उम्मते मोहम्मदीया के मोअज़्ज़िन हैं लोग खौफ में हैं और उन को खौफ नहीं, लोग गम में हैं और उनहें गम नहीं।

(१७) रसूले खुदा ﷺ ने फरमाया कि आज़ान और इकामत के दरमियान की दुआ रद नहीं की जाती।

(१८) जो शख्स हमेशा बा वज़ू रहता है अल्लाह तआला उसे सात खसलतों की इज़्ज़त बख्शता है, औव्वल फरिशे उस की सोहबत से करते हैं, दोसरे आमाल के लिखने वालों का कलम हमेशा सवाब लिखने मे जारी रहता है, तेसरे उस के बदन के तमाम अज्ज़ा तसबीह करते है, चौथे उस से पहली तकबीर फौत नहीं हो ती, पांचवीं फरिशते उस की हिफाज़त

करते हैं उस के सोते वक्त दैव और परयों से, छटे अल्लाह तआला उस पर जांकनी की मुशकिल आसान कर देता है, सातवीं यह कि वह अल्लाह तआला की अमान में रहता है जब तक बा वज़ू रहे।

(१९) हज़रते इबने अब्बास र.अ. से रिवायत है कि एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ मस्जिद से निकल रहे थे कि शैतान आप को मिल गया आप ने फरमाया क्यों मस्जिद की तरफ आने का क्या सबब है। शैतान बोला खुदा ले आया। होज़ूर ने फरमाया क्या काम था बोला ताकि आप मुझ से कुच्छ सवाल करें। इबने अब्बास र.अ. का कौल है कि औव्वल आप ने यह पुछा ए मलउन तु मेरी उम्मत को जमाअत की नमाज़ से क्यो रोकता है। बोला आप की उम्मत जमाअत से नमाज़ पढ़ने का इरादा करती है तो मुझे बुखार चढ़ जाता है, जो उनके मुतफर्रिक होने तक नहीं उतर ता, आपने फरमाया तिलावते कुरआन से क्यों रोकता है, जवाब दिया में कुरआन पढ़ते वक्त रांग की तरह पीघल जाता हूँ। आप ने फरमाया जिहाद से क्यो रोकता है, अर्ज़ किया जब मुस्लमान जिहाद को निकलते हैं तो वापसी तक मेरे पाओं में बेड़ीयां पड़ जाती हैं। आपने फरमाया हज से क्यों रोकता है शैतान बोला सफरे हज करते हैं तो मेरी गरदन में तौक पड़ जाता है और जब कोइ सदका देने का इरादा करता है तो मेरे

सर पर आरा रख दिया जाता है जो लकड़ी की तरह मुझे बीच से चीर डालता है (ज़हरतुर्रियाज़)

(२०) नमाज़े जनाज़ा बा जमाअत मा चार तकबीर की इबतदा हज़रते उम्र र.अ. ने फरमाइ।

(२१) ज़मानए रिसालत मे आज कल की मसाजिद की तरह मेहराब की अलामत नहीं थी बलकि जब हज़रते उम्र इबने अब्दुल अज़ीज़ वलीद बिन अब्दुल मलिक की तरफ से मदीना के गौरनर थे तो मस्जिदे नबवी की तामीर के सिलसिले में मेहराब बनवाइ थी।

(२२) इस्लाम में सब से पहली मस्दि हज़रते अम्मार बिन यासिर र.अ. की बनाइ होवई है।

(२३) इस्लाम की तारीख में हज़रते असद बिन ज़रारह र.अ. पहले शख्स थे जिनहों ने मदीना में जुमा काईम किया था।

(२४) मेहराब के मानी हैं आलए हब्र। मस्जिद को भी मेहराब कहते हैं क्यों कि वह शैतान से लड़ने की जगह है।

(२५) मस्जिदे हराम (मक्का मुअज़्ज़मा) में नमाज़ी के सामने से गुज़रना गुनहगार नहीं बनाता। मगर यह हुक्म मस्जिदे नबवी के लिए नहीं है।

(२६) बाज़ ओलोमा का कौल है कि रुकू एक और सज्दा दो हैं हालांकि दोनों फर्ज हैं। उस का सबब यह है कि रुकू ओबूदीयत का मुद्दई है और सज्दे उस के गवाह हैं और शरइ

गवाही दो की मकबूल होती है।
(२७) नबीए करीम ﷺ ने कुल तीस हज़ार नमाज़ें पढ़ी हैं।
(२८) लेट कर नमाज़ पढ़ने वाला काबा शरीफ की तरफ पाओं करे और तकया पर सर रखे ताकि उस का मुंह काबे की तरफ हो।
(२९) चंद सुरतों में नमाज़ तौड़ देना चाहिए। एक, मां के बुलाने पर नफ्ल नमाज़ तौड़दें जब कि उसे खबर न हो कि मेरा बेटा नमाज़ पढ़ रहा है। दो, अगर कोई शख्स बे खबरी में छत से या कोंवे से गिरा जा रहा हो तो नमाज़ तौड़ दें और उसे बचालें। तीन, अगर नमाज़ी का घोड़ा भागा जाता है या रेल गाड़ी छुटी जा रही हो यह नीचे नमाज़ पढ़ रहा है मगर इन सुरतों में नमाज़ टुट जाऐ गी दो बारा पढ़नी होगी।
(३०) आज़ान में दो फर्ज हैं औव्वल हैय्या-अलल-सलाह, दोसरा हैय्या अलल फहाल। और दस सुन्नतें १,बा वज़ू होना। २, बलंदी पर खड़े होना।३, मस्जिद में दाऐ जानिब खड़े होना। ४, दाऐं बाऐं गर्दन फैरना। ५, पांचों उंगलियाँ कानों में डालना। ६, किब्ला की तरफ मुंह करना। ७, सहि आज़ान कहना। ८, सब कलिमात आज़ान के जुदा जुदा कहना। ९, उंगलियाँ कानों में हिलाना। १०, बाहर सेहन में खड़े रहना।
(३१) आज़ान में तेरह कलिमात कुर्फ है। १, अल्लाह को मद

से बोलना। २, अकबर को अकबार पढ़ना। ३, अशहदो को अशहाद पढ़ना। अशहदो को असहद सीन से पढ़ना। ५, बड़ी हा को हाए हौव्वज़ पढ़ना। ६,छोटी ह को बड़ी हा पढ़ना। ७,लाइलाहा इल्लाह को तशहहुद के बगैर बोलना। ८, शहादतेन को बे अलिफ बोलना। ९, मोहम्मद को महा मिद बोलना। १०, अन्ना को आन्ना पढ़ना। ११, फलाह को मद से न पढ़ना। १२, अस्सलात को मद से बोलना। १३, हेय्या बे तशहहुद बोलना।
(३२) मेराज से पहले होज़ूर अकदस ﷺ और सहाबए किराम नमाज़ पढ़ते थे। हदीसे हिरा के बाज़ तरीक में यह है कि नोज़ूले इकरा के बाद जिबरईले अमीन ने पाओं ज़मीन पर मारा जिस से चशमा जारी हो गया और उसी से वज़ू किया। होज़ूरे अकदस ﷺ देख रहे थे। फिर जिबरईले अमीन ने दो रकअत काबे की तरफ मुंह कर के नमाज़ पढ़ी उन के साथ होज़ूर ने भी पढ़ी फिर दोलत कदे तशरीफ लाए और उम्मुल मुमेनिन खदीजतुल-कुबरा को हुक्म दिया। उनहों ने वज़ू किया और होज़ूर के साथ नमाज़ पढ़ी। उम्मतीयों में नमाज़ पढ़ने का शफ्र सब से पहले खदीजतुल कुबरा र.अ. को ही हासिल हुवा। और उन के बाद हज़रत मौला अली शैर खुदा को। होज़ूरे अकदस ﷺ ने दो शुंबा को औव्वल रोज़ में नमाज़ पढ़ी और हज़रते खदीजा ने उसी

रोज़ आखरी हिस्से में। और हज़रते अली शैरे खुदा ने सेह शुंबा को।

(३३) कब्ल मेराज सिर्फ तहज्जुद फर्ज था वह भी बाद में उम्मत के लिए मंसूख हो गया।

(३४)पूरी हयाते तैय्यबा में होज़ूरे अकदसﷺ का पांच बार नमाज़ में सहव वाके हुवा। औव्वल नमाज़े ज़ोहर या बरवायते बाज़ असर में पांच रकअतें पढ़ीं, दोम नमाज़े ज़ोहर में दो रकअत पर सलाम फैर दिया, सोम कादए उला तरक हो गया, चासररुम असनाए किरत आयत छुट गई, पांचवीं एक बार मगरिब में दो ही रकअत पर सलाम फैर दिया था।

(३५) हदीस में है कि अमामा की नमाज़ बगैर अमामा की नमाज़ से ७० सत्तर दरजा अफजल है।

(३६) नमाज़ में कोइ वाजिब रुकन छुट जाए तो सज्दा सहव वाजिब है और अगर जान बुझ कर छोड़ा है तो नमाज़ लौटानी वाजिब है।

(३७) फर्ज की पहली दो रकअतों में तिलावते कुरआन फर्ज है बाकी में नफ्ल।

(३८) अगर नमाज़ी बहालते नमाज़ सांप या बिछछु देखे तो उसे मार सकता है। आगर अमले कलील से मार दिया तो नमाज़ ना टुटे गी और अगर उस के लिए काबा से सीना

फिर गया या मुतवातिर तीन कदम चलना पड़ा या तीन चोटें मारनी पड़ीं तो नमाज़ टुट जाऐ गी दो बारा पढ़नी पड़े गी अलबत्ता वह शख्स नमाज़ तौड़ ने का गुनहगार न होगा।

(३९) एक अंदाज़ के मुताबिक नबीए करीम ﷺ ने तकरीबन पांच सो जुमे पढ़े हैं इस लिए कि जुमा हिजरत के बाद शुरु हुवा जिस के दस साल आप की हयाते ज़ाहेरी इस अरसा में इतने ही जुमे होते हैं।

(४०) होज़ूरे अकदस ﷺ ने ईदुल-फित्र कभी नहीं छोड़ी, बकरईद हज में छोड़ी क्यों कि हाजी पर नमाज़े बकरईद नहीं है।

(४१) मुस्लमान का एक सज्दा फरिशतों की बहुत सी इबादतों से अफजल है क्यों कि फरिशतों के लिए कोइ रुकावट नहीं और मोमिनों के लिए बहुत सी रुकावटें हैं।

(४२) हज़रते आदम अलैहिस्सलाम से हज़रते इसा अलैहिस्सलाम तक बैतुल-मुकद्दस किब्ला बना, मगर यहुदियों ने उस का मगरीबी हिस्सा और इसाइयों ने मशरीकी हिस्सा इख्तियार किया। रसूले खुदा ﷺ ने अताए नबुव्वत के बाद और मेराज से पहले जो सज्दे सोजुद किए वह बैतुल-मुकद्दस की ही तरफ, शबे मेराज में जब बैतुल-मुकद्दस में तमाम अंबिया की इमामत फरमाइ तो यह नमाज़ बैतुल-मुकद्दस की तरफ हुइ। मेराज के बाद जब तक

मक्का मोअज़्ज़मा में क्याम रहा बैतुल-मुकद्दस की तरफ इस तरह रुखे अकदस करते कि काबा भी सामने आ जाता, मदीना मनौवरा पहुंच कर इस तरह दो किब्लों का एहतजाज ना मुमकिन था लिहाज़ा बैतुल-मुकद्दस की तरफ नमाज़ हो ती रही, मगर सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم को यही लगन थी की हमारा किब्ला काबा हो चुनांचे हिजरत से एक साल साढ़े पांच माह बाद पंदरह रजब पीर के दिन मस्जिदे बनी सलमा में मुसतफा जाने रहमत صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم नमाज़ पढ़ा रहे थे ज़ोहर के फर्ज की दो रकअतें बैतुल-मुकद्दस की तरफ हो चुकी थी कि एने नमाज़ की हालत में हज़रते जिबरईल अलैहिस्सलाम ने अल्लाह का हुक्म सुनाया और सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने सहाबा समेत काबा की तरफ रुख कर लिया। यह नमाज़ नमाज़ किबलतेन हुवइ। और मस्जिदे बनी सलमा जामे किबलतेन कहलाइ। यह मस्जिद अब तक मोजूद है और उस का यही नाम है इस में शुमालन व जोनुबन दो मेहराबें भी हैं। हमारे आका व मौला صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم का लकबे मुबारक बनीयुल-किबलतेन है।

(४३) लेट कर नमाज़ पढ़ने वाला काबा की तरफ पाओं करे और तकया पर सर रखे ताकि उस का मुंह काबा की तरफ हो जाए क्यों कि लेट कर नमाटज पढ़ते वक्त , मेय्यीत को गुसुल देते वक्त और मेय्यीत को मशरकी कबरिस्तान की

दिल की नमाज़ دل کی نماز